राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, बुधवार, 18 मार्च 2026

वर्ष 14,अंक 326, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

पुरानी रंजिश को लेकर हुए मारपीट में गंभीर चार घायल जिला अस्पताल रेफर दो की हालत नाजुक...03

बलिया में किराना दुकान में भीषण आग, दम घुटने से मां-बेटे की मौत....12

यह लड़ाई मेरी नहीं पूरे लद्दाख की है... सोनम वांगचुक बोले- मेरी रिहाई कोई मायने नहीं रखती, जब तक...

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लद्दाख के सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने मंगलवार (17 मार्च) को राजधानी दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि यह लड़ाई सिर्फ उनकी नहीं, पूरे लद्दाख की है. उन्होंने कहा कि और जीत तभी मानेंगे जब लद्दाख का असली भला होगा. उन्होंने कहा कि लद्दाख के हितों की लड़ाई सिर्फ उनकी नहीं बल्कि पूरे लद्दाख के लोगों की है. इस मौके पर वांगचुक के साथ उनकी पत्नी गीतांजलि जे अंगमो भी मौजूद थीं. वांगचुक हाल ही में तकरीबन 6 महीने हिरासत में रहने के बाद रिहा हुए है. सोनम वांगचुक ने कहा कि जेल में रहते हुए भी उन्हें पूरा भरोसा था कि न्याय मिलेगा. उन्होंने कहा कि हमें पता था कि कोर्ट में हमारी जीत होगी. जेल में भी यही यकीन था.उन्होंने यह भी कहा कि उनके लिए व्यक्तिगत जीत मायने नहीं रखती. असली जीत तब होगी जब लद्दाख और वहां के लोगों का भला होगा।

'व्यक्तिगत जीत को मैं महत्वपूर्ण नहीं मानता'

उन्होंने कहा 'मैं जेल से बार आ गया हूं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. मेरी रिहाई कोई मुद्दा ही नहीं थी. व्यक्तिगत जीत को मैं महत्वपूर्ण नहीं मानता. मेरे लिए असली जीत तब होगी जब लद्दाख के लोगों की मांगें पूरी होंगी और वहां के भविष्य को सुरक्षित किया जाएगा. जेल में रहते हुए भी मुझे पूरा भरोसा था कि न्याय मिलेगा और कोर्ट में जीत होगी।'

सरकार की तरफ से बातचीत की पेशकश

रिहाई के बाद सरकार की तरफ से बातचीत की पेशकश पर वांगचुक ने सकारात्मक रुख दिखाते हुए कहा कि सरकार के बातचीत के प्रस्ताव पर हम खुश हैं. उन्होंने कहा कि यह 'विन -विन सिचुएशन' है. सरकार भी अच्छी दिखेगी और हम भी. उन्होंने कहा कि हम हमेशा से बातचीत के लिए तैयार थे आंदोलन से जेल तक, सिर्फ एक मकसद था कि लद्दाख के मुद्दों पर बातचीत हो।

'एक साल जेल में रहने के लिए मानसिक रूप से तैयार था'

सोनम वांगचुक ने आगे कहा कि उन्होंने खुद को पूरे एक साल जेल में रहने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया था. उन्होंने कहा कि जेल में अपना पक्ष रखना मुश्किल था, अपने बात वकील और पत्रकारों तक भी पहुंचाना मुश्किल था. लेकिन वहां सब लोग दयालु थे. उन्होंने कहा कि लद्दाख में हुई हिंसा की जांच होनी चाहिए, क्या हुआ, हिंसा कैसे भड़की, यह समझना जरूरी है.इसके साथ ही उन्होंने आगे बढ़ने की बात भी कही. उन्होंने कहा कि लद्दाख में वो माहौल फिर बनाना है जो वहां के भले के लिए हो।

'मजबूरी में हमें अनशन करना पड़ता है...'

सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा कि हम अनशन नहीं करना चाहते है. कौन भूखा रहना चाहेगा पर मजबूरी में हमें अनशन करना पड़ता है और ये सब हमने गांधी जी से सीखा है. उन्होंने कहा कि सभी को कम से कम एक बार जेल जरुर जाना चाहिए. जेल में नेहरू जी लिखी किताबें पढ़ें. उन्होंने कहा कि जेल में बहुत कुछ सीखा. सबकुछ बुरा भी नहीं था. जेल में कैदियों का एक बैंड भी होता है. उन पर भरोसा करके बाहर बैंड बजाने भेजा जाता है. उनको पैसा भी मिलता था. उन्होंने कहा कि जेल का खाना मुझे बुरा नहीं लगा वहां अंकुरित मूंग और चने मिलते थे. उन्होंने बताया कु जेल में 70% लोग गरीब और अनपढ़ तबके से हैं. वो जेल क्यों जा रहे हैं. कौन भेज रहा है पता लगाना चाहिए. उन्होंने कहा कि सबको पढ़ाने की जरूरत है.सरकार और इस व्यवस्था को बदलने की जरूरत है. केंद्र सरकार और वांगचुक, दोनों की तरफ से बातचीत के संकेत मिल रहे हैं. लेकिन लद्दाख की असली मांगें Sixth Schedule, statehood, पर्यावरण संरक्षण अभी भी अनसुलझी हैं. वांगचुक की रिहाई के बाद अब सबकी नजर इस बात पर है कि केंद्र सरकार और लद्दाख के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत कब और कैसे आगे बढ़ती है. 14 मार्च को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सोनम वांगचुक पर लगाया गया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून हटा लिया, जिसके बाद उनकी रिहाई संभव हो सकी. सोनम वांगचुक पूरे 170 दिनों तक जोधपुर जेल में रहे. उनपर आरोप यह था कि उन्होंने आंदोलन के दौरान स्थानीय लोगों को हिंसा के लिए प्रेरित किया।

सुप्रीम कोर्ट में उद्योग की परिभाषा पर 48 साल बाद फिर बहस शुरू, 9 जजों की संविधान पीठ में सुनवाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की बेंच ने मंगलवार (17 मार्च) को औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के तहत उद्योग शब्द की परिभाषा से संबंधित विवादास्पद मुद्दे पर सुनवाई शुरू की. यह मामला 1978 के एक ऐतिहासिक फैसले की कानूनी वैधता की जांच करेगा, जिसने 'उद्योग' की परिभाषा का विस्तार किया था और लाखों कर्मचारियों को औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के तहत सुरक्षा प्रदान की थी. 48 साल बाद सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता में 9 जजों की संविधान बेंच ने मंगलवार को 1978 के फैसले की वैधता की जांच के लिए सुनवाई शुरू की. इन 9 जजों में जस्टिस बीवी नागरत्ना, जस्टिस पीएस नरसिम्हा, जस्टिस दीपांकर दत्ता, जस्टिस उज्ज्वल भुयान, जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा, जस्टिस जॉयमाल्य बागची, जस्टिस आलोक आराधे और जस्टिस विपुल एम. पंचोली शामिल हैं।

सरकार की ओर से आर वेंकटरमानी हुए पेश

संविधान बेंच के सामने अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमानी ने भारत सरकार की ओर से अपनी दलीलें शुरू कीं. उन्होंने कहा कि 'उद्योग' की यह अति-समावेशी परिभाषा अदालती मामलों में वृद्धि का कारण बनी है और राज्य के संप्रभु तथा कल्याणकारी कार्यों को अनजाने में 'औद्योगिक' के रूप में वर्गीकृत कर रही है।

जस्टिस नागरत्ना ने क्या कहा

जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि भारत में 1991 के सुधार हुए थे, जिनसे उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) लागू हुआ और राज्य द्वारा पहले किए जाने वाले कई कार्य अब निजी क्षेत्र द्वारा किए जा रहे हैं. उन्होंने सवाल किया कि फिर उद्योग की परिभाषा का दायरा क्या होना चाहिए? क्या यह अभी भी बहुत व्यापक होना चाहिए या सीमित, या संतुलन बनाना होगा? उन्होंने कहा कि हम 2026 में हैं, हमने कई सालों तक एलपीजी का उपयोग किया है, जो महिलाओं के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है. जस्टिस नागरत्ना ने ईरान पर अमेरिका-इजराइल युद्ध और होर्मुज जलडमरूमध्य की नौसैनिक नाकाबंदी लागू करने के कारण एलपीजी सिलेंडरों की आपूर्ति में आई बाधाओं का अप्रत्यक्ष रूप से जिक्र करते हुए यह कहा. इस पर एजी वेंकटरमणी ने कहा कि देश में एलपीजी की कोई कमी नहीं है और फिर बेंच ने कानूनी दलीलें सुनीं।

1978 में सात जजों की बेंच ने दिया था फैसला

यह मामला 1978 में सात जजों की बेंच द्वारा दिए गए एक फैसले से उत्पन्न हुआ है, जिसने बंगलूरू जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड के मामले में 'उद्योग' शब्द की एक व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की थी. इस व्याख्या के परिणामस्वरूप, अस्पताल, शैक्षणिक संस्थान, क्लब और सरकारी कल्याणकारी विभागों जैसे विभिन्न क्षेत्रों के कर्मचारी भी औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के दायरे में आ गए थे. सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली 9 जजों की बेंच इस मामले की सुनवाई कर रही है. बेंच का मुख्य उद्देश्य 1978 के फैसले की कानूनी शुद्धता का निर्धारण करना है. हालांकि, बेंच ने स्पष्ट किया है कि वह 1982 के औद्योगिक विवाद (संशोधन) अधिनियम या 2020 के औद्योगिक संबंध संहिता में 'उद्योग' शब्द की परिभाषा पर विचार नहीं करेगी, क्योंकि ये कानून या तो लागू नहीं हुए या भविष्य में अदालती चुनौती का सामना कर सकते हैं. बेंच का ध्यान विशेष रूप से 1978 के बंगलूरू मामले में दिए गए मूल प्रावधान की व्याख्या पर केंद्रित है।

संक्षिप्त ख़बरें

राज्यसभा चुनाव के बाद हरियाणा में कांग्रेस को बड़ा झटका, कार्यकारी अध्यक्ष रामकिशन गुर्जर ने दिया इस्तीफा

कांग्रेस के कद्दावर नेता और प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष रामकिशन गुर्जर ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता और अपने सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है. उन्होंने अपना इस्तीफा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को भेज दिया है. दरअसल, यह इस्तीफा राज्यसभा चुनाव के नतीजों के बाद सामने आया है, जहां कांग्रेस के कुछ विधायकों पर क्रॉस-वोटिंग के आरोप लग रहे हैं।

बता दें कि हाल ही में हरियाणा में राज्यसभा की दो सीटों के लिए चुनाव हुए. आरोप है कि कांग्रेस के कुछ विधायकों ने अपनी पार्टी के उम्मीदवार को वोट देने के बजाय बीजेपी समर्थित उम्मीदवार को वोट दे दिया. सूत्रों के मुताबिक, रामकिशन गुर्जर की पत्नी और नारायणगढ़ से विधायक शैली चौधरी पर राज्यसभा चुनाव में पार्टी लाइन से हटकर क्रॉस-वोटिंग करने का आरोप लग रहा है।

शैली चौधरी भी जल्द दे सकती हैं इस्तीफा

चर्चा ये भी है कि शैली चौधरी भी जल्द ही पार्टी से इस्तीफा दे सकती हैं. सूत्रों के मुताबिक, शैली चौधरी सहित पांच विधायकों पर क्रॉस वोटिंग का आरोप लग रहा है. कांग्रेस पार्टी इन विधायकों पर कार्रवाई कर सकती है. खरगे को भेजे अपने इस्तीफे में रामकिशन गुर्जर ने पार्टी की सभी जिम्मेदारियों से मुक्त होने की इच्छा जताई है. गुर्जर को पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी सैलजा का बेहद करीबी माना जाता है।

एक सीट कांग्रेस तो एक BJP के खाते में गई

हरियाणा में बीजेपी और कांग्रेस को 1-1 सीट मिली है. बीजेपी के संजय भाटिया ने 39 वोट पाकर जीत दर्ज की, जबकि कांग्रेस के कर्मवीर बौद्ध को 28 वोट मिले. निर्दलीय उम्मीदवार सतीश नांदल को 16 वोट हासिल हुए. चुनाव में 5 वोट की क्रॉस वोटिंग भी हुई. साढ़े पांच घंटे की देरी से काउंटिंग शुरू हुई और रात करीब 2 बजे नतीजे घोषित किए गए।

कम उम्र के बच्चों को गोद लेने वाली माताओं को भी मिलेगा मातृत्व अवकाश... सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट ने बच्चे को गोद लेने वाली महिला को को लेकर बड़ा और अहम फैसला सुनाया है. कोर्ट ने कहा है कि गोद लेने वाली महिलाओं को भी मातृत्व अवकाश (मैटरनिटी लीव) से इनकार नहीं किया जा सकता. कोर्ट ने कहा कि गोद लेने वाली महिलाओं को जन्म देने वाली माताओं के समान ही मातृत्व लाभ मिलने करने का अधिकार है।

सुप्रीम कोर्ट ने का कहना है कि 3 महीने से ज्यादा उम्र के बच्चे को गोद लेने वाली महिला को मैटरनिटी लीव देने से इनकार नहीं किया जा सकता. इसके साथ ही कोर्ट ने केंद्र सरकार से पितृत्व अवकाश नीति लाने पर विचार करने का आग्रह किया. सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि मातृत्व संरक्षण एक मूलभूत मानवाधिकार है।

'गोद लेने वाली महिला को मिले मातृत्व अवकाश'

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार (17 मार्च) को एक कानूनी प्रावधान को असंवैधानिक घोषित कर दिया. यह प्रावधान गोद लेने वाली माताओं के लिए मैटरनिटी लीव (मातृत्व अवकाश) को सिर्फ उन माताओं तक सीमित रखता था, जो तीन महीने से कम उम्र के बच्चों को गोद लेती हैं. कोर्ट ने यह फैसला सुनाते हुए कहा कि बच्चे की उम्र चाहे जो भी हो, गोद लेने वाली सभी माताओं को गोद लेने की तारीख से 12 हफ़्ते की छुट्टी का अधिकार होगा. कोर्ट ने कहा कि जन्म देने वाली मां की तरह बच्चा गोद लेने वाली महिला को भी मातृत्व अवकाश मिलना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने कही ये बात

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि 'कोड ऑन सोशल सिक्योरिटी 2020' की धारा 60(4) के तहत उम्र के आधार पर किया गया वर्गीकरण भेदभावपूर्ण था और संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 का उल्लंघन करता था. साथ ही इस बात पर ज़ोर दिया कि मैटरनिटी लीव का मकसद इस बात पर निर्भर नहीं करता कि कोई बच्चा किस तरह से परिवार में आता है. कोर्ट ने कहा कि एक मां में कोई फर्क नहीं किया जा सकता. चाहे वह तीन महीने से कम उम्र के बच्चे को घर लाए या ज़्यादा उम्र के बच्चे को गोद ले. कोर्ट ने आगे कहा कि प्रजनन की आज़ादी का अधिकार सिर्फ़ जैविक जन्म तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह माता-पिता होने की संवैधानिक समझ का विस्तार करता है जिसमें गोद लेना भी शामिल है।

'पैटरनिटी लीव पर विचार करे केंद्र सरकार'

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से यह भी कहा कि वह एक सामाजिक कल्याण उपाय के तौर पर पैटरनिटी लीव (पितृत्व अवकाश) शुरू करने पर विचार करे. इसके जरिए कोर्ट ने देखभाल के मामले में ज्यादा लिंग-तटस्थ और समावेशी दृष्टिकोण की जरूरत का संकेत दिया. सुप्रीम कोर्ट ने बच्चों के हितों पर ज़ोर देते हुए कहा कि बड़े बच्चों को, खासकर उन बच्चों को जिन्हें संस्थागत देखभाल से गोद लिया जाता है, अक्सर नए परिवार में भावनात्मक रूप से घुलने-मिलने और ढलने में ज़्यादा समय लगता है. सबसे ज़रूरी बात बच्चे का सबसे अच्छा हित ही होनी चाहिए जिसमें बच्चे को नए परिवार में घुलने-मिलने के लिए ज़रूरी समय भी शामिल है।

वकील हमसानंदिनी नंदुरी की याचिका पर फैसला

सुप्रीम कोर्ट का यह फ़ैसला कर्नाटक की वकील हमसानंदिनी नंदुरी की एक याचिका पर आया है. उन्होंने उस प्रावधान को चुनौती दी थी, जो पहले मैटरनिटी बेनिफ़िट एक्ट, 1961 में था और बाद में 2020 के कोड में भी शामिल किया गया था. उन्होंने इसे मनमाना और भेदभावपूर्ण बताया था. नंदुरी की याचिका में, जिसकी पैरवी वकील बानी दीक्षित ने की थी, यह भी बताया गया था कि भारत का गोद लेने का ढांचा शायद ही कभी तीन महीने से कम उम्र के बच्चों को गोद लेने की इजाज़त देता है, जिससे उम्र की सीमा वाला यह फ़ायदा ज़्यादातर मामलों में बेमानी हो जाता है।

ग्रेटर नोएडा में मेडिकल ठगी गिरोह का पर्दाफाश, मास्टर माइंड समेत चार सदस्य गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। बिसरख कोतवाली पुलिस ने पूर्व सैनिक की बेटी के अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस) कार्ड पर जालसाजी कर अस्पतालों में लोगों का इलाज करा ठगी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। गिरफ्तार चार आरोपितों की पहचान गाजियाबाद निवासी शिखा सिंह, उसका भाई यश सिंह, फिरोजाबाद निवासी जितेंद्र यादव और बुलंदशहर निवासी दानिश खान के रूप में हुई।

गिरोह करीब 40 लोगों से 10 लाख की ठगी कर चुका है। गिरोह इलाज का पूरा खर्च करने में असमर्थ लोगों को निशाना बनाता था। मरीज को दूसरे व्यक्तियों के नाम और कार्ड पर अस्पताल मुफ्त इलाज कराकर उनसे रकम ले लेते थे। दोनों आरोपित पूर्व में भी इसी तरह की ठगी के कारण जेल जा चुके हैं। जमानत के बाद फिर सक्रिय हो गए।

6. 50 लाख रुपये दिया अस्पताल का बिल

डीसीपी शक्तिमोहन अवस्थी ने बताया आरोपितों ने अलीगढ़ निवासी पूर्व सैनिक की बेटी शालिनी के ईसीएचएस कार्ड और आधार कार्ड का फर्जी तरीके से इस्तेमाल किया। उनके कार्ड पर गाजियाबाद की तनु को 29 जुलाई 2025 को गाजियाबाद के अस्पताल में शालिनी के नाम पर भर्ती करा इलाज कराया। अस्पताल का बिल 6. 50 लाख रुपये बना। पांच अगस्त को इलाज के दौरान तनु की मौत हो गई थी। आरोपितों ने अस्पताल में तनु की पहचान छिपाकर शालिनी के नाम से ही डेथ सर्टिफिकेट जारी करा शव ले लिया था, जब शालिनी इलाज कराने पहुंचीं तब कार्ड के दुरुपयोग की जानकारी हुई। पूर्व सैनिक की शिकायत पर बिसरख पुलिस ने जांच कर गिरोह का पर्दाफाश कर गिरफ्तारी की।

अच्छे अस्पताल में इलाज का झांसा देकर करते थे ठगी

एसीपी पवन कुमार के मुताबिक, गिरोह की मुख्य आरोपित शिखा सिंह की बहन तनु लंबे समय से बीमार थी। अस्पताल में काम करने वाली परिचित ने उसे दानिश खान से मिलवाया था। दानिश कम पैसों में अच्छे अस्पताल में इलाज कराने के लिए मरीज का नाम बदलकर किसी और के दस्तावेज पर भर्ती कराने का भरोसा दिया था। दानिश ने शिखा के वॉट्सएप पर शालिनी का इसीएचएस और आधार कार्ड भेजा। दोनों कार्ड के आधार पर तनु को अस्पताल में भर्ती कराया गया। शिखा ने इसके बदले दानिश को एक लाख रुपये दिए थे।

अस्पताल कर्मियों से सांठगांठ कर मरीज को कराते थे भर्ती

गिरोह के सदस्य जो लोग इलाज का पूरा खर्च नहीं उठा सकते उन्हें लालच देकर फर्जी नाम और दस्तावेजों से अस्पताल में भर्ती कराते थे। गिरोह का मास्टर माइंड दानिश व उसका साथी प्रदीप है। यही दोनों फर्जी ईसीएचएस और आधार कार्ड का इंतजाम करते थे। अस्पताल कर्मियों से साठगांठ कर मूल दस्तावेज दिए बिना मरीज को भर्ती करा देते थे।

जेल से बाहर आने के बाद फिर से हो गए थे सक्रिय

दानिश और प्रदीप दो वर्ष से इसी तरह ठगी कर रहे थे। दोनों को ऐसे ही मामले में नोएडा फेज-दो कोतवाली पुलिस जेल भेज चुकी है। जमानत पर बाहर आने के बाद फिर से दोनों सक्रिय हो गए। पुलिस फरार प्रदीप की तलाश कर रही है। आरोपितों से बरामद आईफोन-15 से ही वॉट्सएप पर फर्जी ईसीएचएस और आधार कार्ड भेजे गए थे। अन्य भी डिजिटल साक्ष्य भी मिले हैं। दानिश पर वर्ष 2025 में नोएडा फेज-दो और वर्ष 2026 में बिसरख में भी ऐसे ही मामले दर्ज किए गए थे।

दिल्ली के रूप नगर में दर्दनाक हादसा: नाले पर बना 60 फुट लंबा लोहे का पुल गिरा, दबने से महिला की मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देश की राजधानी दिल्ली से एक दर्दनाक खबर सामने आई है. मंगलवार सुबह रूप नगर इलाके में एक नाले पर बना करीब 60 फुट लंबा लोहे का भारी-भरकम पुल अचानक भरभरा कर गिर गया. इस हादसे की चपेट में आने से एक 50 वर्षीय महिला की मौत हो गई है. घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया और आनन-फानन में रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया।

दिल्ली फायर सर्विस (DFS) के अधिकारियों के मुताबिक, ये हादसा सुबह करीब 9:30 बजे हुआ. पुल गिरने के दौरान वहां मौजूद एक 50 वर्षीय महिला (जो भिखारी बताई जा रही है) मलबे के साथ सीधे नीचे गहरे नाले में जा गिरी. सूचना मिलते ही फायर टेंडर और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची. रेस्क्यू टीमों ने कड़ी मशक्कत के बाद महिला को बाहर निकाला, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी. डॉक्टरों ने उसे मौके पर ही मृत घोषित कर दिया।

NDRF और पुलिस का संयुक्त रेस्क्यू ऑपरेशन

हादसे की गंभीरता को देखते हुए नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (NDRF), दिल्ली पुलिस और अन्य आपातकालीन एजेंसियों को तुरंत तैनात किया गया. अधिकारियों ने एहतियात के तौर पर पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी है ताकि कोई और अप्रिय घटना न हो. फिलहाल पुल गिरने के सटीक कारणों का पता नहीं चल पाया है, लेकिन प्रशासन ने इस मामले में उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं।

आप नेता सौरभ भारद्वाज ने किया ट्वीट

इस घटना पर आम आदमी पार्टी के नेता और मंत्री सौरभ भारद्वाज ने भी दुख जताया है. उन्होंने सोशल मीडिया (X) पर घटना का वीडियो साझा करते हुए लिखा- रूपनगर में लोहे का पुल गिरने से जान-माल का नुकसान हुआ है. यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें पुल के ध्वस्त ढांचे को देखा जा सकता है।

दिल्ली में पहले भी हुए हैं ऐसे हादसे

दिल्ली में बुनियादी ढांचे की विफलता का यह पहला मामला नहीं है. इसी साल फरवरी में पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी इलाके में दिल्ली जल बोर्ड के एक खुले गड्ढे में गिरने से एक मोटरसाइकिल सवार की जान चली गई थी. वो युवक करीब 12 घंटे तक गड्ढे में पड़ा रहा था, लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगी. रूप नगर की इस घटना ने एक बार फिर दिल्ली के पुराने ढांचों की मजबूती और रखरखाव पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं।

कोरोना से LPG तक... वित्त मंत्री ने बताया भारतीय अर्थव्यवस्था हर चुनौतियों से निपटने में सक्षम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि कोरोना काल में घोषित आत्मनिर्भर भारत योजना का ही नतीजा है कि आज देश किसी भी अनिश्चित चुनौतियों से निपटने में सक्षम है। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध से अर्थव्यवस्था पर होने वाले असर को लेकर मंगलवार को संसद में उठाए गए सवाल के जवाब में वित्त मंत्री ने कहा कि घरेलू स्तर पर इस संकट से देश को कोई गंभीर खतरा नहीं है। सरकार ने अप्रैल से शुरू हो रहे अगले वित्त वर्ष 2026-27 में पूंजीगत खर्च के लिए 12.20 लाख करोड़ का प्रविधान किया है जिससे विकास गति कायम रखने में मदद मिलेगी। ऊर्जा संकट को लेकर उठाए गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि देश में ऊर्जा की कोई कमी नहीं और हमारे पास पर्याप्त ऊर्जा है। वर्ष 2014 के मुकाबले देश में बिजली का उत्पादन दोगुना हो चुका है। अभी देश की बिजली उत्पादन क्षमता 5.25 लाख मेगावाट से अधिक हो चुकी है।

हर चुनौतियों से निपटने में सक्षम भारतीय अर्थव्यवस्था

एलपीजी का उत्पादन भी घरेलू स्तर पर बढ़ाया जा रहा है और अब तक उत्पादन में 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी की जा चुकी है। जरूरत का 65 प्रतिशत एलपीजी हम आयात करते हैं इनमें से 95 प्रतिशत एलपीजी होमुर्ज के रास्ते से आयात किया जाता है। एलपीजी के लिए घरेलू उपभोक्ता को प्राथमिकता दी जा रही है और उन्हें किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो, इसका ख्याल रखा जा रहा है। एक लाख करोड़ के आर्थिक स्थिरता फंड के बारे में सीतारमण ने बताया कि यह एक प्रकार का वित्तीय भंडार (बफर) का काम करेगा और आपात स्थिति में इसका इस्तेमाल किया जाएगा। पिछले सप्ताह उन्होंने संसद को बताया था कि सरकार ने पश्चिम एशिया में युद्ध से उत्पन्न संकट को देखते हुए एक लाख करोड़ के आर्थिक स्थिरता फंड का गठन किया है।

देश में ऊर्जा की कमी नहीं, बिजली उत्पादन दोगुना हुआ

राजकोषीय घाटे पर उठाए गए सवाल के जवाब में सीतारमण ने कहा कि यूपीए के काल में ऑयल बांड के नाम पर जो कर्ज लिए गए, उन्हें बजट में नहीं दिखाया गया। उन्होंने सदन को बताया कि ऑयल बांड के नाम पर जो कर्ज लिए गए और उन पर लगने वाले ब्याज की पूर्ति के लिए एनडीए की सरकार ने 2.92 लाख करोड़ चुकाए हैं। यूपीए के काल में बैंकों की वित्तीय हालत खराब कर दी गई और बैंकों की हालत दुरुस्त करने के लिए एनडीए की सरकार ने 2.8 लाख करोड़ रुपए लगाए। इन सभी रकम को जोड़ दिया जाए तो यूपीए के काल में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 7.9 प्रतिशत होता।

उन्होंने कहा कि कोरोना काल में राजकोषीय घाटा जीडीपी का नौ प्रतिशत तक चला गया था जिसे अब 4.4 प्रतिशत तक ला दिया गया है। वित्त मंत्री ने कहा कि बीएसएनएल को भी यूपीए के काल में फंड व सुविधाओं से वंचित रखा गया। उस काल में विदेश से बड़ी मात्रा में टेलीकाम उपकरण आयात किए जा र हे थे।

भविष्य की दुनिया में सादगी का आख़िरी ठिकाना

[तकनीक से घिरी दुनिया में सादगी का जीवित द्वीप]

[प्रकृति, विश्वास और सादगी पर टिका भविष्य का एक अलग संसार]

भविष्य की कल्पना करते ही एक ऐसी दुनिया सामने आती है जहाँ जीवन का लगभग हर पहलू इंटरनेट से जुड़ा होगा। घर, सड़कें, स्कूल और अस्पताल–सब कुछ डिजिटल नेटवर्क के सहारे चलेगा। मनुष्य का दैनिक जीवन मानो एक विशाल स्क्रीन में सिमटता जाता दिखेगा। लेकिन इसी तेज़ और तकनीक से भरे भविष्य के बीच एक ऐसा गाँव भी होगा जो इस डिजिटल लहर से थोड़ी दूरी बनाए खड़ा होगा। यह गाँव इंटरनेट के बिना भी उतना ही जीवंत और सक्रिय रहेगा। यहाँ तकनीक की कमी को अभाव नहीं, बल्कि एक सोच-समझकर लिया गया निर्णय माना जाएगा। यह स्थान आधुनिक सभ्यता के बीच एक शांत द्वीप जैसा होगा, जहाँ मनुष्य अपने मूल स्वभाव के करीब लौटकर जीवन को बिना कृत्रिम शोर के सच्चाई से महसूस कर सकेगा।

इस गाँव की सुबह आधुनिक शहरों से बिल्कुल अलग होगी। यहाँ दिन की शुरुआत मोबाइल अलार्म या सोशल मीडिया के नोटिफिकेशन से नहीं, बल्कि प्रकृति के सहज संगीत से होगी। सूरज की पहली किरण खेतों पर पड़ते ही धरती की नमी से उठती सुगंध वातावरण को भर देगी। पक्षियों की चहचहाहट लोगों को जगाएगी और ठंडी हवा दिन का स्वागत करेगी। लोग जागते ही किसी स्क्रीन की ओर नहीं झुकेंगे, बल्कि खुले आकाश को निहारेंगे। किसान मौसम का हाल किसी डिजिटल ऐप से नहीं, बल्कि बादलों की चाल, हवा की दिशा और मिट्टी के स्पर्श से समझेंगे। बच्चों की सुबह भी अलग होगी; वे स्कूल जाते समय रास्ते में खेलते हुए, पेड़ों की छाया में हँसते हुए आगे बढ़ेंगे। उनके हाथों में मोबाइल नहीं, बल्कि किताबें, कापियाँ और अनगिनत जिज्ञासाएँ होंगी।

इस गाँव का सामाजिक जीवन मानवीय संवाद की सच्ची गर्माहट से भरा होगा। यहाँ बातचीत किसी चैट विंडो में टाइप किए गए शब्दों से नहीं, बल्कि आमने-सामने की मुस्कान और आँखों की चमक से होगी। शाम ढलते ही लोग अपने-अपने काम से लौटकर चौपाल या आँगन में एकत्रित होंगे। वहाँ दिन भर की घटनाएँ साझा की जाएँगी, हँसी-मजाक होगा और कभी-कभी गंभीर चर्चा भी। बुजुर्गों का अनुभव इस समाज की सबसे बड़ी धरोहर होगा। बच्चे उनके पास बैठकर लोककथाएँ सुनेंगे, जीवन के छोटे-छोटे सूत्र सीखेंगे और अपने अतीत से जुड़ाव महसूस करेंगे। यहाँ ज्ञान किसी सर्वर में बंद नहीं होगा, बल्कि लोगों की स्मृतियों, अनुभवों और परंपराओं में जीवित रहेगा।

आर्थिक दृष्टि से भी यह गाँव आत्मनिर्भरता की मिसाल बनेगा। इंटरनेट के अभाव में यहाँ ऑनलाइन बाज़ार नहीं होगा, लेकिन स्थानीय कारीगरों और किसानों की मेहनत से गाँव की ज़रूरतें पूरी होंगी। कुम्हार के चाक पर घूमती मिट्टी से सुंदर बर्तन बनेंगे, बुनकर के करघे से रंगीन कपड़े निकलेंगे और किसान की मेहनत से खेतों में अन्न की हरियाली लहराएगी। लोग अपने आसपास के लोगों से वस्तुएँ खरीदेंगे और इस लेन-देन में केवल पैसा ही नहीं, बल्कि विश्वास और अपनापन भी शामिल होगा। इस तरह यह गाँव एक ऐसे आर्थिक ढाँचे को जन्म देगा जहाँ स्थानीयता और सहयोग सबसे बड़े मूल्य होंगे।

प्रकृति इस गाँव के जीवन का केंद्र होगी। जब लोग स्क्रीन की कृत्रिम रोशनी से दूर होंगे, तब उन्हें प्रकृति की सूक्ष्म सुंदरता को देखने का समय मिलेगा। वे रात के आकाश में तारों की अनगिनत कतारों को पहचानेंगे और चाँद के बदलते आकार में समय का प्रवाह महसूस करेंगे। नदी का शांत बहाव उन्हें धैर्य और निरंतरता का पाठ पढ़ाएगा, जबकि पेड़ों की छाया उन्हें संतुलन और शांति का महत्व समझाएगी। यहाँ प्रकृति केवल देखने की चीज़ नहीं होगी, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी शिक्षक होगी। इंटरनेट की अनुपस्थिति में भी ज्ञान का प्रकाश कम नहीं होगा, क्योंकि प्रकृति स्वयं एक विशाल पुस्तक की तरह सबके सामने खुली होगी।

इस गाँव का सांस्कृतिक जीवन भी अत्यंत समृद्ध होगा। यहाँ त्योहार केवल औपचारिक आयोजन नहीं होंगे, बल्कि सामूहिक उल्लास और परंपरा का जीवंत रूप होंगे। जब किसी घर में शादी होगी तो पूरा गाँव उसकी तैयारी में शामिल होगा। मेलों और उत्सवों में लोकगीत गूँजेंगे, नृत्य होगा और लोगों के बीच आपसी स्नेह का वातावरण बनेगा। यहाँ मनोरंजन किसी स्क्रीन पर चलने वाले कार्यक्रमों से नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभवों से मिलेगा। लोग मिलकर गाएँगे, कहानियाँ सुनाएँगे और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेंगे। इस वातावरण में अकेलापन कम होगा, क्योंकि हर व्यक्ति खुद को समुदाय का अभिन्न हिस्सा महसूस करेगा।

फिर भी यह गाँव अज्ञान या पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं होगा। यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास की महत्ता को पूरी तरह समझा जाएगा। लोग नई खोजों और विचारों के प्रति खुले रहेंगे, लेकिन वे यह भी समझेंगे कि तकनीक का उद्देश्य जीवन को सरल बनाना है, उसे नियंत्रित करना नहीं। इसलिए इस गाँव के लोग अपने जीवन में एक संतुलन बनाए रखेंगे। वे यह स्वीकार करेंगे कि इंटरनेट एक उपयोगी साधन हो सकता है, परंतु जब वही साधन मनुष्य के समय, ध्यान और मानसिक शांति को छीनने लगे, तब उससे दूरी बनाना भी बुद्धिमानी है। जब पूरी दुनिया तेज़ तकनीक और इंटरनेट के जाल में उलझी होगी, तब कहीं एक ऐसा गाँव भी होगा जो इस डिजिटल बंधन से मुक्त रहेगा। यह विचार हमें गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है कि प्रगति का वास्तविक अर्थ क्या है। क्या विकास केवल उन्नत तकनीक और हर पल जुड़े रहने वाली आभासी दुनिया में ही सीमित है, या वह जीवन भी उतना ही मूल्यवान है जिसमें मनुष्य अपने रिश्तों, संवेदनाओं और प्रकृति से गहराई से जुड़ा रहता है। ऐसा गाँव यह संदेश देगा कि आगे बढ़ने का अर्थ अपनी सरलता और मानवीय मूल्यों को खो देना नहीं है। इंटरनेट के बिना भी यह स्थान सिद्ध करेगा कि जीवन की सच्ची शक्ति आज भी मनुष्य के हृदय, उसकी करुणा और आपसी विश्वास में ही निहित है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

मन की पावनता और गुणों का महत्व मानव जीवन की सच्ची संपदा

मानव जीवन का वास्तविक मूल्य बाहरी वैभव, धन-संपत्ति या शक्ति से नहीं, बल्कि उसके भीतर विद्यमान गुणों से तय होता है। इतिहास इस सत्य का साक्षी है कि संसार में अनेक शक्तिशाली शासक और आक्रान्ता हुए जिन्होंने अपनी ताकत के बल पर देशों को रौंदा, लोगों पर अत्याचार किए और भय का वातावरण बनाया। भारत की भूमि भी ऐसे आक्रमणों से अछूती नहीं रही। इतिहास के पन्नों में जब हम मोहम्मद गजनवी, मोहम्मद गोरी, नादिरशाह और तैमूरलंग जैसे आक्रांताओं के क्रूरतापूर्ण कार्यों को पढ़ते हैं, तो मन सिहर उठता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि कभी-कभी ऐसे क्रूर व्यक्तियों के जीवन से भी ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं, जो हमें जीवन के गहरे सत्य की सीख दे जाती हैं। तैमूरलंग के जीवन का एक प्रसंग इस सत्य को उजागर करता है। एक बार उसने दो मजबूत गुलामों को खरीदा और अपने दरबार में कवि अहमदी से उनकी कीमत पूछी। कवि ने मुस्कराकर कहा कि इनकी कीमत पाँच टके होगी। तैमूरलंग को यह सुनकर बहुत क्रोध आया, क्योंकि उसने उन्हें चार हजार अशर्फियों में खरीदा था। जब उसने अपनी कीमत पूछी तो कवि ने उसे दो टके बताया। यह सुनकर वह क्रोधित हो उठा, पर कवि ने शांत स्वर में कहा कि जो व्यक्ति अपनी बुराइयों का सामना नहीं कर सकता, वह दूसरों से भी कम मूल्य का होता है। यह बात सुनकर तैमूरलंग मौन हो गया। यह छोटी सी घटना हमें यह समझाती है कि मनुष्य का असली मूल्य उसके गुणों और उसके चरित्र से होता है, न कि बाहरी शक्ति से। संसार में गुणों का महत्व सर्वोपरि है। जिस वृक्ष पर फल, फूल और पत्ते नहीं होते, उसका कोई विशेष महत्व नहीं होता। उसी प्रकार बाँझ गाय भी किसी के लिए उपयोगी नहीं मानी जाती। ठीक इसी तरह यदि मनुष्य के जीवन में गुणों का अभाव हो जाए तो उसका जीवन भी निरर्थक हो जाता है। मनुष्य की आत्मा को मूल्यवान बनाने के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र का होना आवश्यक है। यह तीनों तत्व जीवन को ऊँचा उठाते हैं और आत्मा को श्रेष्ठ बनाते हैं।

मनुष्य के जीवन की तुलना उस पक्षी से की जा सकती है जिसके पास उड़ने के लिए पंख होते हैं। यदि पक्षी के पंख ही न हों तो वह आकाश में उड़ान नहीं भर सकता। इसी प्रकार जीवन में यदि सही विचार और सही आचरण के पंख न हों तो मनुष्य भी आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच सकता। जीवन की सफलता के लिए आत्मानुशासन और सद्गुणों का विकास अत्यंत आवश्यक है।

जीवन में गुणों का महत्व समझाने के लिए एक और उदाहरण दिया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति कुआँ खोदता जाए लेकिन उसमें पानी ही न निकले तो उसका सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। उसी प्रकार यदि कोई मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक लंबा जीवन जी ले, लेकिन उस जीवन में धर्म, सदाचार और आत्मचिंतन न हो, तो उसका जीवन भी बिना पानी के कुएँ के समान ही होता है। पानी के कारण ही कुएँ का अस्तित्व सार्थक होता है, उसी तरह गुणों के कारण ही मनुष्य का जीवन सार्थक बनता है।

आज का समय एक ऐसी विडंबना प्रस्तुत करता है जहाँ भौतिक प्रगति तो बहुत हो रही है, लेकिन मानवीय गुणों में कमी दिखाई दे रही है। मनुष्य तकनीक और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ता जा रहा है, परंतु उसके भीतर की मानवता कहीं कमजोर पड़ती जा रही है। यही कारण है कि आज समाज में स्वार्थ, छल-कपट, हिंसा और ईर्ष्या जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ती दिखाई देती हैं। जब मानवता कमजोर पड़ती है तो दानवता सिर उठाने लगती है। इसलिए आज के समय में यह और भी आवश्यक हो गया है कि मनुष्य अपने भीतर झाँककर अपने गुणों को विकसित करे।

मानवीय गुण धीरे-धीरे विकसित होते हैं। जैसे एक-एक ईट जोड़कर मंदिर का निर्माण होता है, वैसे ही एक-एक सद्गुण को अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन को महान बना सकता है। सत्य, करुणा, दया, सहिष्णुता, संयम और विनम्रता जैसे गुण मनुष्य को ऊँचा उठाते हैं। इन गुणों को अपनाने से जीवन में स्थायी सुख और शांति प्राप्त होती है।

गुणों की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय का बहुत महत्व है। अच्छे ग्रंथों का अध्ययन और महापुरुषों की वाणी का श्रवण मनुष्य के विचारों को पवित्र बनाता है। महान चिंतकों ने भी पुस्तकों के महत्व को स्वीकार किया है। एक बार प्रसिद्ध विचारक इमर्सन से किसी ने पूछा कि यदि उन्हें स्वर्ग जाने का अवसर मिले तो वे क्या तैयारी करेंगे। उन्होंने उत्तर दिया कि वे अपनी सारी पुस्तकें साथ ले जाएंगे ताकि वहाँ भी उनका समय ज्ञान अर्जित करने में लगे। यह कथन बताता है कि ज्ञान और स्वाध्याय मनुष्य के जीवन को ऊँचा उठाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं।

मानव जीवन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि मनुष्य को अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए। समय किसी का इंतजार नहीं करता। जो व्यक्ति समय रहते अपने जीवन को सुधार लेता है वही महान बनता है। इसलिए मनुष्य को अपना समय परनिंदा, आलस्य और व्यर्थ की बातों में नष्ट नहीं करना चाहिए। संत तुलसीदास ने भी कहा है कि परनिंदा के समान बड़ा पाप कोई नहीं है। सच्चा मनुष्य वही है जो अपने समय को ज्ञान, साधना और सद्गुणों के विकास में लगाता है। मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं है। धन, वैभव और ऐश्वर्य क्षणभंगुर होते हैं। इनसे स्थायी सुख प्राप्त नहीं होता। वास्तविक सुख आत्मिक शांति में होता है। जब मनुष्य अपने भीतर झाँककर अपने आत्मस्वरूप को पहचानता है तब उसे सच्चा आनंद मिलता है। यही आत्मिक सुख जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। मनुष्य को यह भी समझना चाहिए कि उसका मन ही उसके जीवन का सबसे बड़ा साधन है। यदि मन शुद्ध और शांत रहेगा तो जीवन भी सुखी और शांत रहेगा। लेकिन यदि मन में बुरे विचार और नकारात्मक भाव भर जाएँ तो जीवन अशांत हो जाता है। इसलिए मन की शुद्धि अत्यंत आवश्यक है।

मन को शुद्ध रखने के लिए आत्मानुशासन जरूरी है। प्राचीन ऋषियों और मुनियों ने मन और आत्मा की शुद्धि के लिए अनेक मार्ग बताए हैं। उन्होंने कहा है कि मनुष्य को अशुभ भावों को त्यागकर शुभ भावों को अपनाना चाहिए। क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे दोष मन को अशांत बनाते हैं, जबकि दया, क्षमा और प्रेम जैसे गुण मन को पवित्र बनाते हैं।

मन की शुद्धि को समझाने के लिए एक रोचक उदाहरण दिया जाता है। एक व्यक्ति नदी में स्नान करने के बाद माला जप रहा था। उसके सामने एक फकीर भी माला फेर रहा था, लेकिन वह माला को उलटी दिशा में फेर रहा था। जब उस व्यक्ति ने इसका कारण पूछा तो फकीर ने कहा कि जब वह दुनिया की अच्छाइयों को अपने भीतर ग्रहण करता है तो माला को अंदर की ओर फेरता है और जब वह अपने मन की बुराइयों को बाहर निकालना चाहता है तो माला को बाहर की ओर फेरता है। इस उदाहरण का अर्थ यह है कि मनुष्य को जीवन की अच्छाइयों को अपने भीतर उतारना चाहिए और बुराइयों को बाहर निकाल देना चाहिए।

अंततः यही कहा जा सकता है कि मनुष्य का जीवन तभी सार्थक बनता है जब वह अपने भीतर के गुणों को विकसित करता है। बाहरी उपलब्धियाँ क्षणिक होती हैं, परंतु अच्छे गुण मनुष्य को सदा महान बनाते हैं। यदि मनुष्य अपने जीवन में अच्छाइयों को अपनाए और बुराइयों को त्याग दे, तो उसका जीवन वास्तव में पवित्र और सफल बन सकता है। यही मन की पावनता और गुणों की महत्ता का वास्तविक संदेश है।

कांतिलाल मांडोत

मानवता और संवेदना से भरा न्याय...

हम सभी जानते हैं कि जीवन केवल सांसों का चलना नहीं है। जीवन का असली अर्थ है चेतना, सम्मान और गरिमा। एक मां-बाप के लिए सबसे बड़ा दर्द अपने बच्चे को खोना और उससे भी बड़ा दर्द है उसे वर्षों से पीड़ा में अचेत बने देखना। उससे भी ज्यादा पीड़ा, दर्द हरीश राणा के केस में हम समझ सकते हैं। कभी-कभी सबसे बड़ा प्रेम किसी को पकड़कर रखने में नहीं, बल्कि उसकी पीड़ा को समझने में होता है और दूसरी तरफ न्याय की असली शक्ति तब दिखाई देती है जब कानून के साथ करुणा भी खड़ी हो। हरीश राणा के ि?लए अदालत में केवल एक फैसला नहीं हुआ, बल्कि मानवता और संवेदना की एक नई मिसाल बनी, क्योंकि समाज तभी महान बनता है जब हम दूसरों के दर्द को महसूस करना सीखते हैं। हरीश राणा का मामला हमें यही सिखाता है कि न्याय केवल कानून से नहीं, बल्कि मानवता और संवेदना से भी होता है।

हरीश राणा एक युवा थे, उनके भी सपने थे, उनका भी भविष्य था और उनके माता-पिता की बहुत सारी उम्मीदें थीं लेकिन एक दुर्घटना ने उनकी जिन्दगी को ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया जहां वे वर्षों तक कोमा की स्थिति में पड़े रहे। उनका शरीर जीवित था लेकिन जीवन की चेतना जैसे कहीं खो गई थी। सोचिये उस मां की स्थिति कैसी होगी जो हर दिन अपने बेटे के पास बैठती होगी और यह उम्मीद करती होगी कि शायद वो किसी समय आंखें खोल दे और उस पिता का क्या जिसने अपने बेटे के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया और उस भाई को नमन जो अपने भाई की सेवा कर रहा था, काम पर भी जा रहा था। माता-पिता, भाई ने इलाज, सेवा में कोई कमी नहीं रखी। हरीश की पहले की फोटो और अब की फोटो देखकर दिल रो पड़ता है। सोचो कि एक मां-बाप के ि?लए इससे बड़ा दर्द क्या हो सकता है कि उन्हें अपने ही बेटे के बारे में अदालत से कहना पड़ा कि उसे इस पीड़ा से मुक्ति दी जाए। यह एक कानूनी याचिका नहीं थी, वह एक मां-बाप के टूटे हुए दिल की पुकार थी। जज के सामने भी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। उनके सामने केवल कानून की किताब नहीं थी, उनके सामने एक परिवार का दर्द भी था। जज को भी जजमेंट देने के लिए बड़ा दिल करना पड़ा। उनके ि?लए यानि जज के लिए जीवन की रक्षा करना भी जरूरी है और साथ ही मानव गरिमा का सम्मान करना भी उतना जरूरी है। ऐसे मामलों में निर्णय लेना बहुत आसान नहीं होता, क्योंकि अदालत का हर फैसला समाज के लिए एक उदाहरण बन जाता है। बहुत गहराई से सोचो, डॉक्टरों की रिपोर्ट देखने और कानूनी सिद्धांतों को समझने के बाद अदालत ने निर्णय लिया, क्योंकि यह निर्णय सिर्फ कानून का ही नहीं बल्कि संवेदना और करुणा से भरा हुआ है। कहते हैं जज भी बड़े भावुक थे और एक की आंखों में आंसू थे। मेरा यह सब लिखते भी दिल कांप रहा है। हरीश के पिता की भावुकता से भरी स्टेटमेंट देखी तो वो भी बड़ी भावुक करने वाली थी। हे ईश्वर ऐसा दिन किसी दुश्मन को भी न दिखाये।

जस्टिस पारदीवाला फैसला सुनाते वक्त भावुक हो उठे। उन्होंने अमेरिकी धर्मगुरु हेनरी वार्ड बीचर के शब्दों का हवाला देते हुए कहा, 'ईश्वर मनुष्य से यह नहीं पूछते कि वह जीवन स्वीकार करता है या नहीं, उसे जीवन लेना ही पड़ता है।' उन्होंने विलियम शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक हेलमेट की पंक्ति 'To be or not to be' का भी जिक्र करते हुए कहा कि अदालतों को कई बार इसी तरह के प्रश्नों के संदर्भ में 'मरने के अधिकार' पर विचार करना पड़ता है। लाइफ सपोर्ट हटाने का निर्णय दो आधारों पर होना चाहिए- यह हस्तक्षेप चिकित्सा उपचार की श्रेणी में आता हो। यह मरीज के सर्वोत्तम हित में हो। अदालत ने यह भी कहा कि डॉक्टर का कर्त्तव्य मरीज का इलाज करना है लेकिन जब मरीज के ठीक होने की कोई संभावना न हो तो यह कर्त्तव्य उसी रूप में कायम नहीं रहता।

मेरा भारी मन कह रहा है कि इस उदाहरणीय फैसले के बाद लिविंग विल की चर्चा बढ़ी है और लिविंग विल वह दस्तावेज है जिसमें व्यक्ति पहले से लिख सकता है कि यदि भविष्य में असाध्य बीमारी से पीड़ित हो जाए तो उसे लाइफ सपोर्ट पर न रखा जाए इससे व्यक्ति की इच्छाओं का सम्मान किया जा सकता है। सच तो यह है कि इसके साथ ही अब सामाजिक और नैतिक बहस छिड़ गई है। देहदान के उनके उदाहरण भी अदालतों में भरे पड़े हैं लेकिन हरीश राणा केस ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने संसद को स्पष्ट कानून बनाने की वकालत भी की है। मेरा मानना है कि हरीश राणा का केस भारतीय इंसाफ के मंदिर में एक मील का पत्थर साबित होगा। जीवन का अधिकार जीने के साथ-साथ अगर मौत की बात करें तो वह गरिमापूर्ण तरीके से होनी चाहिए, यह फैसला इच्छा मृत्यु के लिए एक नजीर बनेगा और मानवता के आधार पर हमारे न्याय के मंदिर के पुजारियों को इस कलम का बार-बार सलाम है। मैं ऐसे न्यायधीशों और माता-पिता को बड़े दिल से नमन करती हूं।

संपादकीय

सोनम वांगचुक और लद्दाख के स्वायत्तता का भविष्य

केंद्र सरकार ने हाल ही में लद्दाख के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक पर लगे राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (NSA) को तत्काल प्रभाव से हटा दिया है। जोधपुर जेल में 170 दिनों की हिरासत के बाद उनकी रिहाई ने न केवल लद्दाख के आंदोलन को नई ऊर्जा दी है, बल्कि पूरे क्षेत्र के बदलते राजनीतिक परिदृश्य पर गहन बहस छेड़ दी है। यह घटना 24 सितंबर 2025 को लेह में हुई हिंसक घटना से जुड़ी है, जहां राज्य hood की मांग को लेकर प्रदर्शन भड़क उठे थे और चार लोगों की मौत हो गई थी। वांगचुक की रिहाई केंद्र और स्थानीय आंदोलनकारियों के बीच संवाद की संभावना को मजबूत करती दिखती है, लेकिन लद्दाख की लंबे समय से चली आ रही मांगें पूर्ण राज्य का दर्जा, छठी अनुसूची में शामिल होना, अलग लोक सेवा आयोग और संसदीय सीटें अभी भी अनसुलझी हैं।

इस पूरे घटनाक्रम को समझने के लिए हमें थोड़ा पीछे मुड़कर देखना होगा। सोनम वांगचुक कोई पेशेवर राजनेता नहीं रहे हैं, बल्कि उनकी पहचान एक ऐसे नवप्रवर्तक और शिक्षा सुधारक की रही है जिसने लद्दाख की बंजर भूमि पर 'आइस स्टूपा' जैसे कृत्रिम हिमनद बनाकर दुनिया को जल संरक्षण का एक नया रास्ता दिखाया। 1966 में जन्मे इस इंजीनियर ने लद्दाख की कठिन भौगोलिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच शिक्षा क्रांति ला दी। 1988 में उन्होंने स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL) की स्थापना की, जो स्थानीय भाषा-संस्कृति पर आधारित शिक्षा प्रदान करता है। यह कैंपस पूरी तरह सौर ऊर्जा पर चलता है और जीवाश्म ईंधन से मुक्त है, जो वांगचुक की पर्यावरण संरक्षण की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने आइस स्टूपा–कृत्रिम हिमनद–का आविष्कार किया, जो सूखाग्रस्त इलाकों में पानी संरक्षण का अनूठा तरीका है। रेमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता वांगचुक को फिल्म '3 इडियट्स' के फुंसुक वांगडू किरदार के लिए भी जाना जाता है। लेकिन 2019 में जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन के बाद लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश बनने पर उनकी भूमिका बदल गई। अनुच्छेद 370 और 35 के खात्मे से स्थानीय लोग अपनी भूमि, नौकरियों और सांस्कृतिक पहचान पर खतरे की घंटी बजा रहे थे। वांगचुक ने तब से शांतिपूर्ण आंदोलन शुरू किया अनशन, पदयात्रा और दिल्ली मार्च–जिसमें लेह एपेक्स बॉडी (LAB) और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (KDA) उनके साथ थे। सितंबर 2025 का वह दिन लद्दाख के आधुनिक इतिहास का सबसे काला अध्याय माना जाएगा, जब लेह की सड़कों पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन ने अचानक हिंसक रूप ले लिया। राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल किए जाने की मांग को लेकर हजारों की भीड़ जब प्रशासन से टकराई, तो हुई हिंसा में चार जानें चली गईं। यह वह बिंदु था जहाँ से सरकार ने अपनी रणनीति बदली और सोनम वांगचुक को इस अशांति का सूत्रधार मानते हुए उन पर एनएसए लगा दिया गया। किसी ऐसे व्यक्ति पर, जिसने जीवन भर अहिंसा और गांधीवादी मूल्यों का प्रचार किया हो, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा होने का आरोप लगाना पूरे देश में बहस का विषय बन गया। जोधपुर जेल की कालकोठरी में बिताए गए उनके 170 दिन लद्दाख के लोगों के लिए एक भावनात्मक घाव बन गए, जिसने आंदोलन को और अधिक संगठित और धारदार बना दिया।

लद्दाख का मुद्दा केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं है, इसके पीछे छिपी है वह पर्यावरणीय चिंता जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के भविष्य को प्रभावित कर सकती है। हिमालय जिसे 'तीसरा ध्रुव' कहा जाता है, आज जलवायु परिवर्तन की मार सबसे ज्यादा झेल रहा है। वांगचुक का तर्क हमेशा से यह रहा है कि यदि लद्दाख को संवैधानिक सुरक्षा नहीं मिली, तो यहाँ होने वाला अनियंत्रित औद्योगिक विस्तार और अंधाधुंध पर्यटन यहाँ के ग्लेशियरों को निगल जाएगा। यह एक विडंबना ही है कि जो व्यक्ति देश के जल स्रोतों को बचाने की गुहार लगा रहा था, उसे ही 'राष्ट्रीय सुरक्षा' के लिए खतरा घोषित कर दिया गया। जबकि सच तो यह है कि हिमालय की सुरक्षा ही भारत की वास्तविक सुरक्षा है। यदि ये पहाड़ और उनकी नदियाँ सूख गईं, तो मैदानों की खुशहाली स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। रणनीतिक दृष्टि से भी लद्दाख का महत्व सर्वोपरि है। चीन और पाकिस्तान के साथ सटी सीमाओं के कारण यह क्षेत्र हमेशा से सैन्य गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहाँ भारतीय सेना की विशाल उपस्थिति है और बुनियादी ढांचे का विकास राष्ट्रहित में आवश्यक है। लेकिन क्या यह विकास स्थानीय लोगों की सहमति और उनकी संस्कृति की कीमत पर होना चाहिए? वांगचुक और उनके समर्थक इसी संतुलन की मांग कर रहे हैं। वे सेना के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि वे चाहते हैं कि लद्दाख का विकास 'दिल्ली मॉडल' पर नहीं बल्कि 'लद्दाख मॉडल' पर हो, जहाँ भूमि और संसाधनों पर पहला हक वहां के मूल निवासियों का हो। पूर्व सैनिकों और स्थानीय युवाओं का इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना यह दर्शाता है कि यहाँ देशभक्ति और क्षेत्रीय पहचान एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

मार्च 2026 में उनकी रिहाई के पीछे कई कारण हो सकते हैं। शायद सरकार ने यह महसूस किया कि लद्दाख जैसे संवेदनशील क्षेत्र में जनता का असंतोष अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि को नुकसान पहुँचा सकता है, या फिर यह आने वाले समय में होने वाली किसी बड़ी वार्ता की पूर्वपीठिका है। जो भी हो, इस रिहाई ने लद्दाख के जनमानस में एक नई ऊर्जा भर दी है। अब सवाल यह उठता है कि क्या सरकार केवल रिहाई तक सीमित रहेगी या वह उन मूल मांगों पर भी विचार करेगी जिनके लिए यह सारा संघर्ष शुरू हुआ था? छठी अनुसूची में शामिल होने का मतलब केवल आरक्षण नहीं है, बल्कि यह उस गौरव और स्वाभिमान की सुरक्षा है जो लद्दाख के लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ता है।

सोनम वांगचुक की जेल यात्रा ने उन्हें एक क्षेत्रीय नेता से ऊपर उठाकर एक राष्ट्रीय प्रतीक बना दिया है। आज देश का युवा वर्ग उन्हें एक ऐसे नायक के रूप में देख रहा है जो सत्ता के सामने सच बोलने का साहस रखता है। उनकी रिहाई के बाद लेह और कारगिल की सड़कों पर उमड़ा जनसैलाब इस बात का गवाह है कि वे अब केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचार बन चुके हैं। यह विचार है पर्यावरण आधारित विकास और लोकतांत्रिक स्वायत्तता का। सरकार के लिए भी यह एक अवसर है कि वह लद्दाख के साथ अपने संबंधों को पुनः परिभाषित करे। दमन के बजाय विश्वास बहाली के उपाय ही इस सीमावर्ती क्षेत्र में स्थायी शांति सुनिश्चित कर सकते हैं। अंततः, यह घटनाक्रम हमें लोकतंत्र की उस बुनियादी ताकत की याद दिलाता है जहाँ असहमति की आवाज़ को दबाने के हर प्रयास के बाद वह और अधिक मजबूती से उभरती है। लद्दाख की बर्फीली हवाओं में अब जो गर्माहट महसूस की जा रही है, वह किसी बदले की नहीं बल्कि अपने हक़ की है। सोनम वांगचुक का बाहर आना संवाद के बंद पड़े दरवाजों को फिर से खोलने की एक कोशिश है। यदि अब भी सही दिशा में कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाला समय और भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। लद्दाख के इस संघर्ष ने पूरे देश को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या हम विकास की दौड़ में अपनी पहचान और प्रकृति को पीछे छोड़ने के लिए तैयार हैं? वांगचुक की रिहाई इस लंबे संघर्ष का अंत नहीं, बल्कि उस नए अध्याय की प्रस्तावना है जिसमें हिमालय की सुरक्षा और लद्दाख के अधिकारों की इबारत लिखी जानी अभी बाकी है।

महेन्द्र तिवारी

ग्लोबल वार्मिंग नए तेवर में, धरती की उष्णता और तीव्रता से बढ़ेगी

ग्लोबल वार्मिंग या धरती की उष्णता की जब भी कहीं चर्चा होती है तो यह निश्चित तौर पर अमेरिका,इंग्लैंड और तमाम यूरोपीय देश जिसमें फ्रां,इटली,कनाडा इजरायल ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड तथा पश्चिम एशिया के धनवान देश में इस्तेमाल की जा रही ऊर्जा के कारण जहां वातानुकूलित मशीने, कल कारखाने, मोटर वाहन एवं अन्य ऐसी मशीने जिनसे कार्बन डाइऑक्साइड एवं दूषित हवा वायुमंडल में फैलती है ही बड़े जिम्मेदार होते हैं और इसका खामियाजा दक्षिण एशिया दक्षिण अफ्रीका और छोटे-छोटे देश को उठाना पड़ता है। ग्लोबल वार्मिंग के उपाय के लिए आयोजित बड़े-बड़े सम्मेलनों में यही बड़े देश अपनी जिम्मेदारी छोटे-छोटे देश पर डालकर निवृत्ति हो जाते हैं। जबकि सारा किया कराया इन्हीं देशों का होता है और छोटे-छोटे देश को इसके लिए नियमन पालन की जिम्मेदारी सौंप जाती है। भारत जैसे विकासशील देश में ही जहां गरीबी ने अपना परचम फैला रखा है। शहरों में पेट्रोल ,डीजल, केरोसिन से चलने वाली गाड़ियों और वातानुकूलित यंत्रों याने ए,सी की संख्या में बेतहाशा वृद्धि होने से वातावरण में उष्णता बढ़ते जा रही हैद्य इसके अलावा वनों का विनाश एक भयानक समस्या के रूप में देश में फैलता जा रहा हैद्य अंधाधुंध फैक्ट्रियों एवं मशीनों के उपकरणों से निकलने वाले धुंए से वातावरण विषैला बनाकर मनुष्य और जीव जंतुओं का जीना दूभर कर दिया है। वनों की कटाई के साथ-साथ कंक्रीट के जंगल धीरे-धीरे गांव की तरफ बढ़ने लगे हैं, ऐसे में शुद्ध वायु और और तापमान में आश्चर्यजनक बदलाव जिसके परिणाम स्वरूप वर्षा ऋतु के परिवर्तन एवं बारिश में न्यूनता आने से धरती के तापमान में बेतहाशा वृद्धि हुई है। इसी के चलते देश के कई शहरों में तापमान 48 से 50 सेल्सियस होने के कारण पशु पक्षी एवं मनुष्य की हीट स्ट्रोक से मृत्यु हुई हो जाती है। पानी की कमी तथा शरीर में डिहाइड्रेशन से लोगों की तथा वन्य पशुओं की लगातार मृत्यु हो रही है।

ग्लोबल वार्मिंग का खतरा वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे विश्व में बहुत बढ़ गया है और ऐतिहासिक तौर पर पिछले दो से तीन सौ वर्षों की तुलना की जाए तो बीते कुछ वर्षों में धरती का तापमान आश्चर्यजनक रूप से तीव्र गति से बढ़ गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी के पास ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए कुल मिलाकर 10 से 15 वर्ष ही शेष है। वैज्ञानिकों की यह बातें और रहस्योद्घाटन मानवता को डराने वाला जरूर है पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके उपायों की जो घोर अनदेखी की जा रही है वह अत्यंत चिंतनीय है। मानवता के लिए अत्यंत खतरनाक भी है। ग्लोबल वार्मिंग न सिर्फ मनुष्य के लिए खतरा है बल्कि जीव-जंतुओं समुद्र मैं पाए जाने वाले जीवो के लिए भी यह अत्यंत विषैला तथा खतरनाक हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिकों के शोध के अनुसार जीवाश्म ईंधन के दशक ने एवं जलने से ग्लोबल वार्मिंग का तापमान तेजी से बढ़ा है एवं पूरी पृथ्वी जीवाश्म ईंधन के जलने से तेजी से धड़क रही है। वैज्ञानिकों की चेतावनी तथा दिए गए प्रमाण के बाद भी अनेक देश जो कार्बन उत्सर्जन के बड़े जिम्मेदार हैं, जीवाश्म ईंधन की इस्तेमाल को कम करने या खत्म करने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। जीवाश्म ईंधन की खपत खत्म होने की बात तो दूर है कम करने का नाम ही नहीं ले रहे हैं, और तो और इसके आसार भी निकट भविष्य में दिखाई नहीं दे रहे हैं। भारत को छोड़कर अन्य यूरोपीय देशों जिसमें अमेरिका ब्रिटेन के अलावा 32 देशों ने जो कार्बन उत्सर्जन एवं जीवाश्म ईंधन के उपयोग के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार हैं, सम्मेलन कर इस पर चिंता जरूर जताई है पर इसमें स्पष्ट तौर पर अमेरिका, ब्रिटेन ,जापान चीन ,रूस की दादागिरी दिखाई देती है,यह छोटे गरीब देशों पर सारी जिम्मेदारी लादने का काम कर रहे हैं ।विश्व के कुल देशों में से लगभग 50 देश ऐसे हैं जो जीवाश्म ईंधन का उपयोग कर पृथ्वी को धधकाने के कार्य का 60% तक हिस्सेदारी रखते हैं। लेकिन इन देशों को ग्लोबल वार्मिंग की चिंता की बजाए विकासशील देश एवं गरीब देशों पर पर्यावरण सुरक्षा के नाम पर ग्लोबल वार्मिंग के नाम पर दोषारोपण कर के अपनी इतिश्री कर लेते हैं। ग्लोबल वार्मिंग तथा पर्यावरण चिंतन जितने भी सम्मेलन हुए हैं इसमें बड़े देशों की नीति एवं दादागिरी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। चीन जो सबसे बड़ा कार्बन का उत्सर्जक देश है उसने पर्यावरण पर हुए सम्मेलनों में हिस्सेदारी तो दूर उसकी तरफ ध्यान देना भी उचित नहीं समझा। इंटरनेशनल पॉल्यूशन कंट्रोल कमिटी ने चेतावनी दी है कि धरती के तापमान की वृद्धि को डेढ़ डिग्री तक रोकने के लिए कार्बन उत्सर्जन में 43% से 50% तक कटौती करनी होगी। 2010 से लेकर 2021 तक दुनिया का औसत वार्षिक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन मानव इतिहास में सबसे उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है जो सर्वाधिक खतरे के निशान से भी ऊपर है। फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन के वजह से होने वाली ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए हमें अपने उत्सर्जन को लगभग शून्य पर लाना होगा, और इस कार्य के लिए पूरी दुनिया को ऊर्जा क्षेत्र में बड़े और कार्यकारी बदलाव लाने होंगे, इसके अलावा जीवाश्म ईंधन के उपभोग में भारी कमी भी लानी पड़ेगी। विगत 3 वर्षों में अक्षय ऊर्जा स्रोतों में जैसे सौर एवं पवन ऊर्जा साथी स्टोरेज बैटरी की लागत में आश्चर्यजनक गिरावट आई है जो लगभग गैस तथा कोयले की कीमत के बराबर हो गए हैं। कार्बन उत्सर्जन अभी 54% अधिक है। वास्तविक रूप से देखा जाए तो दुनिया के सब अमीर देश अकेले विश्व के कुल गैस उत्सर्जन के लिए बड़े जिम्मेदार पाए गए हैं। वैज्ञानिकों ने कहा है कि अगले आठ दस सालों में अपने गैस उत्सर्जन में कटौती को आधा यानी 50% से कम नहीं करती है तो वर्ष 2050 तक उसे शून्य स्तर पर लाना होगा, अगर ऐसा नहीं किया तो पृथ्वी को तबाह होने से कोई नहीं रोक सकता है। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो भारत मोटे तौर पर ग्रीन हाउस गैसों के कुल वैश्विक उत्सर्जन में सहित 6.8 प्रतिशत का हिस्सेदार है। 1990 से लेकर 1920 तक भारत के ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में एक में 175% की बढ़ोतरी हुई है। 2013 से 2021 के बीच देश के प्रति व्यक्ति उत्सर्जन की मात्रा 17 फ़ीसदी बढ़ी है, राहत की बात यह है कि अब भी भारत का उत्सर्जन स्तर जी-20 देशों के औसत स्तर से बहुत नीचे है। देश में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी 11% की है, भारत की कुल ऊर्जा आपूर्ति में जीवाश्म ईंधन आधारित प्लांट का योगदान 74% है। यदि कार्बन उत्सर्जन को रोका नहीं गया और जीवाश्म ईंधन के उपयोग की रफ्तार यही रही तो भारत सहित विश्व के अधिकांश देश अपनी धरती को बचाने में सक्षम नहीं होंगे।

संजीव ठाकुर

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना में बच्चों ने सीखा योगा

सीतापुर चंद्रभानु गुप्त कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय विशेष शिविर के छठे दिन योग गुरु आनंद अवस्थी के द्वारा योगाभ्यास कराया गया तथा राखी निगम द्वारा आर्ट एवं क्राफ्ट डिजाइन पर भी प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य डॉ योगेंद्र कुमार सिंह, कार्यक्रम अधिकारी धनेंद्र कुमार सिंह, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव डॉ दीप्ति श्रीवास्तव, डॉ उपमा त्रिपाठी एवं डॉ सुधीर सिंह रघुवंशी, डॉ हृदय नारायण तिवारी, डॉ पी के सिंह, डॉ दीपक पांडे, डॉ अनिल कुमार वर्मा, डॉ विवेक कुमार वर्मा, डॉ अखिलेश शर्मा, डॉ इबाद, डॉ श्वेता मिश्रा, डॉ सुधाकर सिंह, डॉ रश्मि पांडे, डॉ रजनी शुक्ला, डॉ कमलाकांत, प्रशासनिक अधिकारी शिव मंगल चौरसिया, समन्वयक अधिकारी अजय सिंह भदोरिया, सहित सभी शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित रहे। महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि मंगलवार को शिविर का अंतिम दिन है छात्रों को प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे और एन एस एस के विभिन्न प्रभावी बिंदुओं पर चर्चा होगी।

शाखा प्रबंधक बदलते ही यूनियन बैंक ऑफ इंडिया हारौनी की तस्वीर

खातेदारों की संख्या बढ़ने के साथ ही बढ़ा बैंक का राजस्व

लखनऊ। बंथरा के हरौनी बाजार स्थित यूनियन बैंक ऑफ इंडिया जहां पूर्व में ग्राहकों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता था लेकिन नवनियुक्त शाखा प्रबंधक प्रशांत त्रिवेदी के आने से अब ग्राहकों में संतुष्टि दिखाई दे रही है। यूनियन बैंक में सोमवार को आये ग्राहकों से बैंक जाकर बात की गई तो उन्होंने कहा कि पहले से अब बैंक में काम ठीक हो रहा है हमें लेने देन में भी कोई दिक्कत नहीं होती है। ग्राहकों में तमाम हरौनी बाजार के व्यापारी भी बैंक में मौजूद थे। वहीं नवनियुक्त शाखा प्रबंधक द्वारा ग्राहकों को बैठने के लिए अब बेंचें भी बैंक लगाई गई है और पानी के लिए बैंक में नल की व्यवस्था भी की गई है। यही नहीं बैंक आने वाले लोगों को धूप से बचाव के लिए टीनशेड लगवाया गया है। बैंक का नये सिरे मरम्मत व नये फर्नीचर बनवाने का भी कार्य भी जल्द शुरू होने वाला है।

आवश्यकता है

सम्बद्धता स्ववित्त पोषित योजना अन्तर्गत प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय प्रयागराज उ. प्र.

आर. आर. महाविद्यालय बैजलपुर अमरगढ़ पट्टी प्रतापगढ़ 230124 को प्राचार्य 01 पद, स्नातक स्तर पर - कला संकाय, हिंदी साहित्य 01 पद, संस्कृत 01 पद, प्राचीन इतिहास 01 पद, राजनीति विज्ञान 01 पद, शिक्षाशास्त्र 01 पद, गृहविज्ञान 01 पद, समाजशास्त्र 01 पद, विज्ञान संकाय जन्तु विज्ञान 01 पद, वनस्पति विज्ञान 01 पद, रसायन विज्ञान 01 पद, भौतिक विज्ञान 01 पद, गणित 01 पद परास्नातक स्तर पर हिंदी साहित्य 02 पद, प्राचीन इतिहास 02 पद, गृहविज्ञान 02 पद

योग्यता- यू.जी. सी. के मानकानुसार नेट/पी.एच. डी. वेतनमान स्ववित्त पोषित योजनान्तर्गत राज्यसरकार द्वारा निर्धारित वेतनमान देय होगा। इच्छुक अभ्यर्थी विज्ञापन तिथि से 15 दिन के अन्दर समस्त प्रमाण पत्र की स्वप्रमाणित छायाप्रति तीन नवीन फोटो संलग्न कर पंजीकृत डाक द्वारा भेंजे।

प्रबन्धक
पंकज यादव
मो0-9670115555

पुरानी रंजिश को लेकर हुए मारपीट में गंभीर चार घायल जिला अस्पताल रेफर दो की हालत नाजुक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। थुलवासा चौकी क्षेत्र के पूरे महतो मजरे थुलवासा गांव में पुरानी रंजिश को लेकर एक पक्ष ने दूसरे पक्ष की लाठी-डंडों व कुल्हाड़ी से जमकर पिटाई कर दी। घटना मे गंभीर रूप से घायल पति-पत्नी जिला अस्पताल में ज़िन्दगी व मौत से जूझ रहे हैं।

जानकारी के अनुसार पूरे महतो गांव निवासी बाबूलाल और पप्पू के परिवार के बीच लंबे समय से पुरानी रंजिश है । जिसको लेकर सोमवार सुबह सात बजे पप्पू के परिवार ने बाबूलाल के परिवार पर लाठी-डंडों व कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। घटना में बाबूलाल व उनकी पत्नी कलावती, बेटा इंद्रेश व प्रदीप समेत चार गंभीर रूप से घायल हो गए। बीच-बचाव करने आए ग्रामीणों द्वारा एम्बुलेंस की मदद से चारों घायलों को सीएचसी महराजगंज लाया गया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद चारों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। बाबूलाल के बेटे प्रदीप कुमार ने गांव के ही पप्पू पुत्र किरसन, सत्येंद्र कुमार पुत्र पप्पू, गीता पत्नी पप्पू और रोशनी पुत्री पप्पू के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी है। उन्होंने बताया कि पप्पू के परिवार ने घर में घुसकर उनकी माता पिता व भाई की लाठी-डंडों व

कुल्हाड़ी से जमकर पिटाई कर दी। मामले में कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि दोनों पक्षों के घायलों का उपचार चल रहा है। चौकी इंचार्ज थुलवासा को जांच के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी।

बाइक ने सड़क पार कर रही महिला को मारी टक्कर, दोनों घायल

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के बाईपास रोड पर बरदाही मोहल्ले के पास सोमवार को सड़क पार कर रही एक महिला को तेज रफ्तार बाइक ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में महिला और बाइक सवार दोनों घायल हो गए। बहाई गांव निवासी विपिन बाइक से डलमऊ रोड की ओर जा रहे थे। इसी दौरान बरदाही मोहल्ला निवासिनी संगीता कुछ महिलाओं के साथ पास के एक क्लीनिक में इलाज कराने जा रही थीं। सड़क पार करते समय बाइक ने उन्हें टक्कर मार दी।टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों सड़क पर गिर पड़े और घायल हो गए। घटना के समय सड़क पर भारी वाहन भी गुजर रहे थे। हालांकि आसपास मौजूद लोगों ने तत्परता दिखाते हुए दोनों को फौरन सड़क से हटाया। इससे बड़ा हादसा टल गया। दोनों घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। जहां उनका इलाज किया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बाइक की रफ्तार काफी तेज थी जिसके कारण चालक संतुलन नहीं संभाल सका।

रजक भवन पुराना किला में होली मिलन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में जिला रजक कंपू पंचायत के तत्वाधान में रजक भवन, 8/68 पुराना किला, लखनऊ में होली मिलन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रजक समाज के अनेक गणमान्य एवं वरिष्ठ सदस्यों ने भाग लेकर आपसी भाईचारे और एकता का संदेश दिया। इस अवसर पर पूर्व मीडिया प्रभारी दिनेश कुमार कनौजिया ने सभी वरिष्ठ साथियों के साथ होली मिलन किया।

उपस्थित सभी लोगों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर और फूलों की होली खेलकर आपसी प्रेम, सौहार्द और भाईचारे के साथ होली पर्व की शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कनौजिया ने कहा कि लखनऊ में रजक समाज के जितने भी संगठन हैं, यदि वे सभी एक मंच पर एकजुट होकर कार्य करें, तो समाज की प्रगति और कल्याण के लिए और भी प्रभावी

प्रयास किए जा सकते हैं। उन्होंने समाज के लोगों से एकता और सहयोग की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ साथी मोहन चौधरी, राधे चौधरी, एस.के. कनौजिया, मनोज चौधरी, राकेश चौधरी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का वातावरण उत्साह, सौहार्द और सामाजिक एकता के भाव से परिपूर्ण रहा।

श्री गया धाम व भगवान जगन्नाथ दर्शन उपलक्ष्य में ब्रह्म भोज, श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के ऐहार गांव में सोमवार को श्री गया धाम और भगवान जगन्नाथ के दर्शन के उपलक्ष्य में ब्रह्म भोज का आयोजन किया गया। धार्मिक कार्यक्रम में क्षेत्र भर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए और श्रद्धा भाव से प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम की शुरुआत आयोजकों द्वारा विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर की गई। इसके बाद श्रद्धालुओं के लिए ब्रह्म भोज की व्यवस्था की गई, जिसमें ग्रामीणों और आसपास के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। गांव में आयोजित कुदुआ भोज को देखने और उसमें शामिल होने के लिए भी लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। पूरे आयोजन के दौरान भक्ति और उत्साह का माहौल बना रहा। श्रद्धालु देर तक कार्यक्रम स्थल पर मौजूद रहे और प्रसाद ग्रहण किया। आयोजन के दौरान गांव के कई लोग व्यवस्थाओं में जुटे रहे। इस अवसर पर श्रीराम धवल मास्टर, रामखेलावन, राजू, सज्जन, चंदन, शुभम, हर्षित, राहुल, समीर, कुनाल, सक्षम, साहिल और सार्थक सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

ट्रेन से कटकर बुजुर्ग की मौत, पहचान कराने में जुटी पुलिस

उन्नाव-ऊंचाहार रेलखंड पर कोइली का पुरवा गांव के पास रेलवे ट्रैक पर मिला शव

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के उन्नाव-ऊंचाहार रेलखंड पर कोइली का पुरवा गांव के पास सोमवार सुबह ट्रेन से कटकर एक बुजुर्ग की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने का प्रयास शुरू कर दिया। गांव के निकट किलोमीटर संख्या 115/5 के पास बुजुर्ग का शव रेलवे ट्रैक पर धड़ से अलग हालत में पड़ा मिला। स्थानीय लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी, जिसके बाद रेलवे पुलिस की सूचना पर स्थानीय पुलिस भी मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। समाचार लिखे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो सकी थी। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया जा रहा है। पहचान होने के बाद आगे की आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

सांसद राकेश राठौर ने बिसवां तहसील से मनरेगा बचाओ यात्रा वाहन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां/सीतापुर सीतापुर के सांसद राकेश राठौर ने बिसवां तहसील से मनरेगा बचाओ यात्रा वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इससे पूर्व तहसील परिसर स्थित शहीद पार्क में मनरेगा बचाओ रथ यात्रा के आयोजक डॉ. आर.पी. वर्मा द्वारा आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। जनसभा को संबोधित करते हुए श्री राठौर ने कहा कि मनरेगा से महात्मा गांधी का नाम हटाया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मनरेगा कोई साधारण योजना नहीं, बल्कि गरीबों को काम देने का एक संवैधानिक अधिकार था। लेकिन वर्तमान सरकार किसान, मजदूर और व्यापारी किसी के भी हित में काम नहीं कर रही है और मात्र पूंजीपतियों की सरकार बनकर रह गई है। उन्होंने नगर में गैस की भारी किल्लत को भी सरकार की विफलता करार दिया।

इस अवसर पर मनरेगा बचाओ रथ यात्रा के आयोजक तथा कांग्रेस चिकित्सा प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष डॉ. आर.पी. वर्मा ने कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार में मनरेगा लगातार कमजोर हुई है, जिसके कारण गांव खाली हो रहे हैं और गरीबों के सामने रोजगार का संकट बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि जरूरत इस बात की है कि कांग्रेस को मजबूत कर प्रदेश और केंद्र में जनहितैषी सरकार बनाई जाए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बृज बिहारी ने किया। उन्होंने कहा कि बिसवां विधानसभा क्षेत्र में लगभग 1 लाख 20 हजार मनरेगा मजदूर हैं, जिनमें करीब 82 हजार दलित मजदूर शामिल हैं। यदि मनरेगा कमजोर होती है तो उनके सामने

रोजी-रोटी का गंभीर संकट खड़ा हो जाएगा। इस मौके पर सुनीला रावत, शिव प्रकाश सिंह, काशीराम भार्गव, अब्दुल करीम अंसारी, हसीना खातून, अशोक पुष्प, रोशनी गुप्ता, समीर गुप्ता, विजय अवस्थी, शिवकुमार कठेरिया, निर्मल यादव, रामदास यादव सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय शायर खुर्शीद अफसर बिसवानी के 86वें जन्म दिवस पर

● अनोखी साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे शायर अफसर बिसवानी।

शायर खुर्शीद अफसर बिसवानी ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर बिसवां का नाम किया रोशन।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। शायर खुर्शीद अफसर बिसवानी अनोखी साहित्यिक प्रतिभा के धनी रहे हैं। वह हिंदी उर्दू साहित्य के लिए एक मिसाल थे। हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक सूफी संत शैखुल औलिया हज़रत गुलजार शाह और बाबा विश्वनाथ की पवित्र नगरी बिसवां ने 16 मार्च 1940 को सैय्यद खुर्शीद अफसर बिसवानी जैसे मशहूर अन्तर्राष्ट्रीय शायर को जन्म दिया। उन्होंने अपने बचपन में कानपुर में रहकर मशहूर शायर एवं महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मौलाना हसन मोहानी के घर जाकर शिक्षा ग्रहण की उसके बाद अपने गृह नगर बिसवां आकर उस समय के मशहूर शायर जिगर बिसवानी के शागिर्द हो गये।कौमी यकजहती का शायर खुर्शीद अफसर बिसवानी तंग हालातों से लड़ने और मुश्किलों का सामना करने का संदेश अवाम को देता रहा। उनकी शायरी में भारतीय सभ्यता एवं इंसानियत की तस्वीर नजर आती है। उन्होंने 21 वर्ष की कम उम्र से ही साहित्यिक लेखन का कार्य शुरू कर दिया था। उन्होंने अपने नाम के साथ साथ बिसवां का भी नाम रोशन किया। दर्जनों काव्य संग्रहों, गीत व ग़ज़ल संग्रहों के अलावा दर्जनों साहित्यिक ग्रंथों की रचनाएं की तथा तमाम पत्र पत्रिकाओं के लिए नियमित रूप से लेखन का कार्य भी किया।पेशे से वह एक अच्छे वकील भी थे। उन्हें साहित्य लेखन के लिए दर्जनों राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार भी मिले। उनके 86वें जन्मदिन पर जहांगीराबाद कस्बे में बज़्म ए सुखनो अदब एण्ड वेलफेयर सोसायटी के चेयरमैन डा0 वकील अहमद खान 'अजहर खैराबादी' के आवास पर एक संगोष्ठी कर उन्हें याद किया गया। इस मौके पर हाफिज शफकत अली खान 'फूल मियां ',खबीर अहमद खान उर्फ हसीर खान, खिजिर खान, महद खान, परवीन बेगम, अमन श्रीवास्तव, कमर खान, मनाल खान, अशोक कुमार व सबाहुद्दीन, सैफ अली उर्फ आलम सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे। उन्होंने समाज को आगाह करते हुए कहा था कि- 'ऐसा न हो चराग कहीं घर ही फूंक दे,

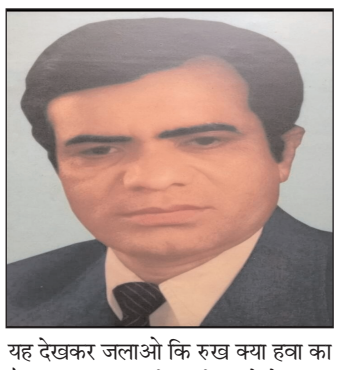

यह देखकर जलाओ कि रुख क्या हवा का है।' उनकी शायरी बड़े तजर्बे व होशो हवास शायरी की थी। ऐसा कोई विषय नहीं जिस पर उन्होंने कलम न उठाई हो। खुर्शीद अफसर बिसवानी ने मोहब्बत के पैगाम को आम करते हुए कहा कि- 'हमने दुश्मन को भी दुश्मन नहीं समझा अफसर, हम तो कातिल को भी जीने की दुआ देते हैं।' उनके जज़्बात का अंदाजा इस शेर से लगाया जा सकता है कि- ' बढ़ते हैं, भटकते हैं, गिरते हैं, समझते हैं। मंजिल के तमन्नाई हर हाल में चलते हैं। '

मोहब्बत व भाई चारा का पैगाम देते हुए 17 जून 2001 को वह हम सभी को छोड़कर इस फानी दुनिया से रुखसत हो गये।फिर भी जब तक यह दुनिया रहेगी उनका नाम अदब की दुनिया में एहतराम से लिया जाता रहेगा। आज वह मेरे बीच नहीं है लेकिन उनका नाम हमेशा अमर रहेगा।

भागवत कथा के चौथे दिन राम अवतार. कृष्ण अवतार. वामन अवतार को सुनकर श्रोता हुए तृप्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। तहसील क्षेत्र के ओथी ग्राम सभा में सप्तवेदी, गणेश आंबिका, रूद्र हनुमत देव, सहित मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन यजमान आशीष मौर्य के यहां आनंद मिश्रा के द्वारा संकल्पित छठवीं श्रीमद् भागवत कथा का हो रहा भव्य आयोजन। आपको बता दें कि, ग्राम सभा ओथी में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के चौथे दिन सोमवार को सिधौना अमांवा से पधारी कथा व्यास संध्या साध्वी ने वामन अवतार कृष्ण अवतार एवं श्री राम अवतार की कथाओ का विस्तार रूप से व्याख्यान किया। कथा व्यास ने बताया कि, वामन अवतार में भगवान नारायण राजाबली से भगवान वामन ने तीन पग भूमि मांगी अपने गुरु शुक्राचार्य के माना करने पर भी राजाबली वामन भगवान को तीन पग भूमि दान कर दी। वामन भगवान ने तीन पग में ही पूरे ब्रह्मांड को नाप लिया। और राजाबली भगवान वामन को अपने द्वार पर खड़े रहने के लिए वरदान मांगा। कथा व्यास ने बताया कि, माता देवकी के गर्भ में आठवें पुत्र के रूप में भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया और कंस का वध कर दिया। कथा व्यास ने कृष्ण जन्म, वामन अवतार, राम

अवतार, जैसे विभिन्न कथाओं का वर्णन करते हुए पांडाल में बैठे समस्त श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। कथा के विराम पश्चात आरती और प्रसाद वितरण का कार्यक्रम हुआ। विकासखंड क्षेत्र के ग्राम सभा जिहवा के रहने वाले आनंद मिश्रा ने बताया कि, उनके द्वारा श्रीमद् भागवत कथाओं के भव्य अनुष्ठान पूरे जीवन काल भर चलते रहेंगे जिसमें आयोजित यह छठवीं श्रीमद् भागवत कथा है। इस मौके पर यज्ञशाला के मुख्य यज्ञाचार्य पंडित योगेंद्र तिवारी, उपयज्ञाचार्य पंडित अमरेश शुक्ला, पंडित अरूण त्रिपाठी, व्यवस्थापक सोनू मौर्य, अवधेश मौर्य, संत प्रसाद, बबलू प्रजापति, संकठा प्रसाद, बाबा जयजयराम, दिनेश कोटेदार, शिवकुमार, कन्हैया मौर्य, शिव प्रसाद, संकर मौर्य, महेंद्र, धुन्नू, जगप्रसाद, पल्लू सहित आदि भक्त उपस्थित रहे।

अवैध तमंचा व जिंदा कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली पुलिस टीम ने सोमवार को एक युवक को अवैध तमंचे व जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध आर्म्स एक्ट की धारा में केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया। एसआई अमरनाथ व राजेश सिंह की टीम ने तलाशी अभियान के दौरान सरेनी रोड पर शाहपुर पुल के निकट संदिग्ध युवक को पकड़ लिया। तलाशी के दौरान उसके पास 315 बोर का एक अवैध तमंचा व 315 बोर का एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध आर्म्स एक्ट की धारा में केस दर्ज करते हुए कार्रवाई की। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि सरेनी थाना क्षेत्र के प्रतापपुर गांव निवासी आशु सिंह पुत्र राजू सिंह को अवैध तमंचे व जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया गया। उसे जेल भेज दिया गया है।

ऋषि का सद्साहित्य नैतिक शिक्षा प्रदान करता है: उमानन्द शर्मा

● गायत्री ज्ञान मंदिर का ज्ञान यज्ञ अभियान, आर्यकुल कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट में हुई 459वाँ युगऋषि वाङ्मय की स्थापना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत आर्यकुल कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, नटकूर, निकट सीआरपीएफ बेस कैम्प के पुस्तकालय में गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों का 459वाँ ऋषि वाङ्मय की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री सुनील कुमार वैश्य एवं सीमा वैश्य ने अपने ससुर गुरू प्रसाद वैश्य की स्मृति में उपरोक्त संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि वाङ्मय साहित्य भेंट किया तथा संकाय सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं को अखण्ड ज्योति (हिन्दी) पत्रिका भी भेंट किया।

इस अवसर पर वाङ्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा ने कहा कि ऋषि का सद्साहित्य नैतिक शिक्षा प्रदान करता है। इस अवसर पर वी0के0

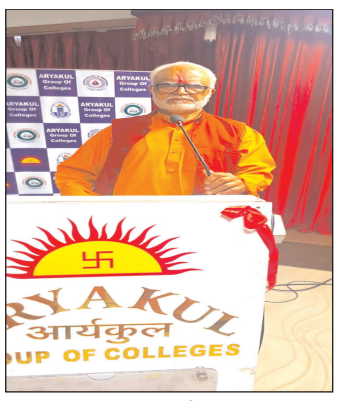

श्रीवास्तव एवं सीमा वैश्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

हेड पत्रकारिता आर्य टीवी/आर्य प्रवाह डॉ0 अजय शुक्ला ने कार्यक्रम का संचालन किया। वाङ्मय साहित्य स्थापना के इस अवसर पर गायत्री ज्ञान मंदिर के प्रतिनिधि उमानंद शर्मा, वी0के0 श्रीवास्तव, देवेन्द्र सिंह, निर्मला पाण्डेय, सीमा वैश्य, सुनील कुमार वैश्य, ममता वैश्य एवं अशोक कुमार वैश्य और संस्थान के प्रबंध निदेशक डॉ0 सशक्त सिंह, डीन एकेडमिक रूचि सिंह, रजिस्ट्रार सुदेश तिवारी, प्रधानाचार्या डॉ0 अंकिता अग्रवाल, एचओडी अब्दुल रब खान, हेड पत्रकारिता आर्य टीवी/आर्य प्रवाह डॉ0 अजय शुक्ला सहित अन्य संकाय सदस्य तथा छात्र-छात्रायें मौजूद रहे।

शक्ति अभियान के अंतर्गत बिसवां ब्लॉक सभागार में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां सीतापुर शक्ति अभियान के अंतर्गत बिसवां ब्लाक सभागार में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बनाया गया। सम्मेलन में' शक्ति सम्मान' पत्र देकर महिलाओ को सम्मानित किया गया। महिला दिवस की आयोजक विभा सिंह ने कहा कि महिलाएं शक्ति का स्रोत है, दुनिया की, देश की आधी आबादी हैं।महिलाओं के भारत के साथ - साथ पूरी दुनिया में संघर्ष का एक इतिहास रहा है।उन्होंने अमेरिका में 1908 में भेदभाव और काम के घंटों को कम कराने को लेकर अपने देश की तत्कालीन सरकार और फैक्ट्री मालिकों के विरोध में बड़ा संघर्ष किया , जीत भी हासिल की और नए आयाम कायम किए। उनके संघर्ष की बदौलत ही आज महिला कुछ स्वतंत्र हुई है लेकिन पूरी तरह से आज भी महिलाओं पर बंदिशे खत्म नहीं हुई है।देश की आजादी की लड़ाई लड़ने में रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरतमहल, ऊदा देवी , लक्ष्मी सहगल जैसी महिलाओ का शानदार इतिहास रहा है, देश का संविधान बनाने वाली संविधान सभा में 15 महिलाये सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, विजयलक्ष्मी पंडित,जैसी महिलाओं की भागीदारी थी। वही समाज को सुधार लाने, शिक्षा को बढ़ावा देने में सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख जैसी महिलाएं आज भी लाखों महिलाओं को प्रेरणा देती है। दुनिया मे जिस तरह युद्धोंन्माद

बढ़ रहा है उसका सबसे अधिक असर महिलाओ पर पड़ेगा। अंतराष्ट्रीय स्तर पर महिलाएं कही भी नीति निर्णायक नहीं होती है। देश में महिलाओं को देश के सर्वोच्च पदों पर बराबरी का मौका और भागीदारी नहीं मिल पा रही है। कार्यक्रम को पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अब्दुल अतीक खान, कमरुन निशा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बिसवां ब्लॉक के पूर्व अध्यक्ष अब्दुल करीम अंसारी, नागरिक अधिकर संगठन हरिशंकर गुप्ता, वादा फाउंडेशन श्रीराम यादव, वामा संस्था की ज्योति भारती, शर्मावती, ने संबोधित किया। अंत में महिलाओ को शक्ति सम्मान पत्र हरियाली का प्रतीक गमले देकर सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वाली महिलाओ मे सरिता भारती, सुषमा भार्गव, रीना, राधा, अनुप्रास मिश्रा, रूबी, कमरुननिशा अंसारी, फूलजहां, माया देवी, मीना, गीता, बालजती, शाहजहाँ, मायावती, शिवदेवी, रामकोरी, संध्या, रहमतजहां, रूपरानी, सावित्री, सम्मानित किया गया।

बिसवां के पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा की अलख, स्कूल से दूर बच्चों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ रहा पहल फाउंडेशन

● 'शिक्षा संकल्प' अभियान को मिली गति, ड्रॉपआउट बच्चों के पुनः प्रवेश का संकल्प

डॉ. सुधाकर का यह सपना! शिक्षित हो हर बच्चा अपना!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। आज दिनांक 16 मार्च 2026 को ग्रामीण अंचलों में शिक्षा के प्रति चेतना जाग्रत करने और विद्यालय से दूर हो चुके बच्चों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से पहल फाउंडेशन द्वारा संचालित 'शिक्षा संकल्प' अभियान को व्यापक रूप दिया जा रहा है। इसी क्रम में बिसवां तहसील क्षेत्र की ग्राम पंचायत भूरकुड़ी के भुरकुंडा गांव के बाजार में एक विशेष जन-जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य ड्रॉपआउट तथा स्कूल से बाहर रह रहे बच्चों को पुनः विद्यालयों में प्रवेश दिलाना था। यह कार्यक्रम प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. सुधाकर वर्मा के प्रेरक स्वप्न 'शिक्षित हो हर बच्चा अपना' को साकार करने की दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों,

अभिभावकों तथा विद्यार्थियों को शिक्षा के बहुआयामी महत्व से अवगत कराया गया। विशेष रूप से बालिका शिक्षा, विद्यालयी अनुशासन तथा निरंतर अध्ययन की आवश्यकता पर बल देते हुए वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। यदि समाज का प्रत्येक बच्चा शिक्षित होगा, तभी एक सशक्त, जागरूक और प्रगतिशील समाज का निर्माण संभव हो सकेगा। इस अवसर पर आयोजित विशेष कार्यशाला के माध्यम से अभिभावकों को अपने बच्चों का शीघ्र विद्यालयों में प्रवेश कराने के लिए प्रेरित किया गया तथा यह भी बताया गया कि जो बच्चे किसी कारणवश पढ़ाई से दूर हो गए हैं, उन्हें पुनः शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। वक्ताओं ने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजें।

कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्त्री पूजा वर्मा ने विभिन्न प्रेरक गतिविधियों, संवाद सत्रों एवं सहभागितापूर्ण कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। उन्होंने बच्चों को विद्यालय जाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि शिक्षा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, जागरूक और सशक्त नागरिक बनाती है। इस अवसर पर डॉ. चंद्रशेखर प्रजापति, सतीश वर्मा, प्रेम यादव, पुष्पेंद्र वर्मा, लवकुश यादव, विकास निगम सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिकों एवं ग्रामीणों ने सहभागिता करते हुए बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के संकल्प को दोहराया। कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो समाज के पिछड़े वर्गों को प्रगति, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान के मार्ग पर अग्रसर कर सकती है।

संक्षिप्त खबरें

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2025 की घोषणाः हिंदी की ममता कालिया और राजस्थानी के जितेन्द्र कुमार सोनी सम्मानित

देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्य अकादमी ने वर्ष 2025 के साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्यकारों को उनकी उल्लेखनीय कृतियों के लिए सम्मानित किया जाएगा। हिंदी भाषा के लिए वरिष्ठ साहित्यकार ममता कालिया को उनकी चर्चित संस्मरणात्मक कृति 'जीते जी इलाहाबाद' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार 2025 प्रदान किया जाएगा, जबकि राजस्थानी भाषा में लेखक जितेन्द्र कुमार सोनी को उनके कहानी संग्रह 'भरखमा' के लिए यह प्रतिष्ठित सम्मान दिया जाएगा। साहित्य अकादमी द्वारा घोषित इन पुरस्कारों में देश की 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकार शामिल हैं, जिनकी कृतियों में कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण और आलोचना जैसी विधाएँ सम्मिलित हैं। इस अवसर पर दैनिक निर्माण के संपादक जसराज बिश्नोई ने सभी सम्मानित साहित्यकारों को बधाई देते हुए कहा कि साहित्य अकादमी पुरस्कार भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा और रचनात्मक शक्ति का प्रतीक है यह सम्मान नई पीढ़ी के साहित्यकारों को सृजन के लिए प्रेरित करता है। दैनिक निर्माण परिवार की ओर से सभी विजेता साहित्यकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह सम्मान केवल रचनाकारों की उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं की जीवंत साहित्यिक परंपरा है।

दिनदहाड़े शिक्षिकाओं के साथ छिनैती का हुआ प्रयास, दहशत का माहौल

लालगंज तथा लीलापुर थाना क्षेत्र में घटित घटनाओं की पड़ताल में जुटी पुलिस

लालगंज, प्रतापगढ़। दो थाना क्षेत्रों में शिक्षिकाओं के साथ दिनदहाड़े छिनैती के प्रयास की घटनाओं को लेकर सोमवार को दहशत का माहौल बन गया। पहली घटना लालगंज कोतवाली के गौतमपुर गांव के समीप हुई। राजकीय बालिका इण्टर कालेज में शिक्षिका डा. शालिनी बाला सिंह सुबह साढ़े नौ बजे स्कूल के लिए स्कूटी से जा रही थीं। इसी बीच बाइक सवार दो अज्ञात बदमाश शिक्षिका के सोने की कान की बाली तथा सोने की चेन छीनने का प्रयास करने लगे। शिक्षिका ने साहसिक ढंग से बाली तथा चेन गेहूं के खेत में फेंक दी। घटना की जानकारी मिलते ही प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गये। पुलिस ने घण्टों खोजबीन के बाद चेन को बरामद कर लिया। घटना की जानकारी मिलने पर लालगंज सीओ आशुतोष मिश्रा भी मौके पर पहुंच गये। पीड़िता शिक्षिका ने घटना को लेकर पुलिस को तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार का कहना है तहरीर मिली है मुकदमा दर्ज कर बदमाशों को जेल भेजा जायेगा। दूसरी घटना सोमवार को ही लीलापुर थाना क्षेत्र के पूरनपुर खजूर गांव में स्थित प्राथमिक विद्यालय के अन्दर घटित हुई है।चौंकाने वाली घटना में बदमाश सुबह करीब ग्यारह बजे स्कूल के अंदर कक्ष में घुस गये। बदमाशों ने कक्ष में शिक्षिका माया सिंह पर तमंचा सटा दिया। बदमाशों ने शिक्षिका की चेन को छीनने लगे तब उसने शोर मचा दिया। आधी चेन बदमाश लेकर भाग निकले। विद्यालय के अन्दर बदमाशों का दुस्साहस देखकर ग्रामीण भी अचम्भित हो उठे। शिक्षिका ने घटना के बाबत लीलापुर थाने में तहरीर दी है। सीओ लालगंज आशुतोष मिश्रा का कहना है केस दर्ज कर बदमाशों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। एक ही दिन में दिनदहाड़े हुई वारदातों से दहशत का माहौल बना देखा गया।

बलिया में किराना दुकान में भीषण आग, दम घुटने से मां-बेटे की मौतः पत्नी-बेटे को बचाने में जुटा पति छत से कूदा, पैर फ्रैक्चर; 5 घंटे बाद बुझी आग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलियाः बलिया के गड़वार थाना क्षेत्र के चिलकहर गांव में रविवार देर रात एक किराना दुकान में भीषण आग लगने से दर्दनाक हादसा हो गया। आग लगने से पूरे मकान में धुआं भर गया, जिससे दम घुटने से मां और उसके 4 साल के बेटे की मौत हो गई। वहीं, जान बचाने के लिए पति पहली मंजिल से कूद गया, जिससे उसका पैर फ्रैक्चर हो गया। फायर ब्रिगेड और स्थानीय लोगों ने करीब 4-5 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। जानकारी के अनुसार चिलकहर निवासी नीरज चौरसिया (32) ने करीब 5 साल पहले चिलकहर-मटिहीं रोड पर मकान बनवाया था। मकान के आगे दो दुकानें थीं, जिनमें किराने का सामान रखा जाता था, जबकि पीछे के हिस्से में परिवार रहता था। घर में नीरज की पत्नी रिंकी (27), 4 साल का बेटा धीरज, छोटा भाई दीपक और दुकान में काम करने वाला नौकर राजू गुप्ता रहते थे।

बताया जा रहा है कि रविवार रात खाना खाने के बाद सभी लोग सो गए थे। देर रात अचानक दुकान में आग लग गई और देखते-ही-देखते पूरे घर में धुआं भर गया। घुटन महसूस होने पर नीरज की नींद खुली। वह नीचे आग बुझाने गया, लेकिन आग काफी तेज हो चुकी थी। इसके बाद वह ऊपर पहुंचा और परिवार को बाहर निकालने की कोशिश करने लगा, लेकिन बाहर का दरवाजा नहीं खुल सका।

आखिरी फोन कॉल में बोली- 'भइया बचा लीजिए' आग लगने के बाद रिंकी ने पास में कपड़े की दुकान चलाने वाले पिंटू सिंह को फोन किया और घबराते हुए कहा- 'भइया, घर में आग लग गई है, बचा लीजिए... नहीं तो हम मर जाएंगे।' सूचना मिलने के बाद पिंटू सिंह और आसपास के लोग मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक आग और धुआं काफी फैल चुका था।

पति ने छत से कूदकर बचाई जान पड़ोसियों के मुताबिक, नीरज किसी तरह पहली मंजिल से कूदकर बाहर आ गया, जिससे उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया। इसके बाद लोगों ने मेन गेट का ताला तोड़ा और आग बुझाने की कोशिश की। नीरज भी अंदर घुसा और पत्नी व बेटे को बाहर निकालकर दरवाजे तक ले आया। लोगों ने दोनों को अस्पताल ले जाने की कोशिश की, लेकिन तब तक मां-बेटे की मौत हो चुकी थी।

दो दिन पहले हुआ था बेटे का मुंडन स्थानीय लोगों ने बताया कि मृतक बच्चे धीरज का दो दिन पहले ही मुंडन संस्कार हुआ था। हादसे के बाद पूरे इलाके में मातम पसरा हुआ है।

परिजनों ने लगाया गंभीर आरोप

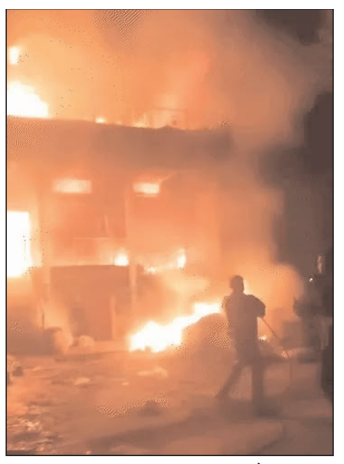

मृतका रिंकी के पिता पुरुषोत्तम चौरसिया ने ससुराल पक्ष पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि परिवार में मकान को लेकर विवाद चल रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि ससुर ने बाहर से गेट में ताला लगाकर मकान में आग लगा दी, जिसके कारण उनकी बेटी और नाती की मौत हुई।

पुलिस कर रही जांच एसपी ओमवीर सिंह ने बताया कि सोमवार तड़के करीब 3:30 बजे आग लगने की सूचना मिली थी। पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। इस घटना में दम घुटने से महिला और 4 साल के बच्चे की मौत हुई है। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

शिक्षित व्यक्ति उपभोक्ताओ को उनके अधिकारो के प्रति करें जागरूक- कलेक्टर

● सही चीजें, सही दाम पर अंतिम छोर तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल। विष्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम- कलेक्टर डॉ. केदार सिंह की अध्यक्षता में विष्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कलेक्टर ने कहा कि समाज के हर शिक्षित व्यक्ति का दायित्व है कि वह स्वयं जागरूक रहकर दूसरो को भी उपभोक्ता से संबंधित जानकारियां देकर उनके अधिकारो एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करें। हम सब किसी न किसी रूप में उपभोक्ता है हमें हर वस्तु जांच परख कर खरीदनी और उपयोग करनी चाहिए। सही गुणवत्ता की चीजे सही दाम पर समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाने का दायित्व भी हम सबका है। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओ को खाद्य सामग्री खरीदते समय सामग्री की गुणवत्ता और उस सामग्री की अंतिम तिथि अवष्य देंखना चाहिए, मध्यप्रदेष शासन द्वारा उपभोक्ताओ के लिए नापतौल, खाद्य आपूर्ति जैसी अन्य सभी व्यवस्था सुनिष्चित की गई है।

कलेक्टर ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा संचालित जनहितकारी योजनाओ का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाने में अपनी भूमिका निभाएं एवं सोषल मीडिया जैसे अन्य माध्यमो में प्रसारित की गई भ्रामक जानकारियो से दूर रहें एवं आमजन को तथ्यात्मक जानकारी ही साझा की जाएं। जिला आपूर्ति नियंत्रक श्री विपिन पटेल ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब भी आपको खरीददारी करने जाना हो पहले से योजना बना कर जाएँ। जिन वस्तुओं को खरीदना है. उसकी एक सूची बना लें। इससे आप जरूरी सामान नहीं भूलेंगे और बिना जरूरत के सामानों की खरीददारी करने से बच सकेंगे, जिन पैकेट बन्द उत्पादों को आप खरीद रहे हैं उसके उपभोग की अंतिम तिथि की जाँच अवश्य करें। कहीं ऐसा तो नहीं कि आप पुराने और खराब वस्तुओं की खरीद करने जा रहे हैं, इसके अलावा, पैकेट पर अंकित अन्य सूचनाओं जैसे, कौन सी कंपनी ने उत्पाद को बनाया है उसका पता पैकेट पर अंकित होना चाहिए साथ ही वस्तु की मात्रा तथा बनाए जाने या पैक किए जाने की तिथि एवं बैच नं. लाट नं. अधिकतम खुदरा मूल्य आदि की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिए। ऐसा करके आप नकली उत्पादों की खरीददारी से अपने को बचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर खुला सामान खरीदते हैं तो उस सामान की गुणवत्ता के बारे में अच्छी तरह से पूछताछ करके ही खरीदें तथा उपयोग करने पर आपको उसमें किसी प्रकार की खराबी या मिलावट का अनुभव होता है तो तुरंत दुकानदार को वापस करें तथा उसे दुबारा ऐसा सामान न बेचने की हिदायत दें।

कार्यक्रम को समाजसेवी श्री बीपी तिवारी ने सम्बोंधित करते हुए कहा कि वस्तुओं की खरीददारी करने के बाद दुकानदार से रसीद कैशमेमों की माँग अवश्य करें। अगर दुकानदार रसीद देने में आनाकानी करता है तो उस दुकान से अगली बार सामान न खरीदें। उत्पादों के पैकेटों पर छपे गुणवत्ता युक्त चिह्नों जैसे, आईएसआई, एगमार्क, एफपीओ आदि का चिह्न देखकर खरीददारी करें। उन्होंने कहा कि यदि कोई दुकानदार खाद्य सामाग्री में मिलावटी विक्रय करता है तो इसकी शिकायत खाद्य एवं औषधि प्रशासन को की जाए। कार्यक्रम में अन्य सदस्यो ने भी अपने-अपने विचार साझा किये। इस अवसर पर कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने जिला आपूर्ति नियंत्रक श्री विपिन पटेल, अर्थो सर्जन डॉ. अरविंद अम्बेडकर, वरिष्ठ सर्जन डॉ. बीपी पटेल, डॉ. ओमप्रकाष चौधरी,राकेष कुमार, महेष सोनी, राहुल मिश्रा, नेपाल सिंह, श्री अषोक दुबे को उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रषस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर जन परिषद चौप्टर के संभागीय अध्यक्ष श्री शुभदीप खरे, महिला अध्यक्ष श्रीमती सुरसरि मिश्रा, श्री विष्णु प्रताप सिंह, जिला चिकित्सालय के डॉक्टर्स, पत्रकार सहित उपभोक्ता सरंक्षण के सदस्य एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहें।

हमें अपने आपको बदलने का बेहतरीन महीना रमज़ान है

● रोज़ा सिर्फ़ फ़ाक़ा करने का नहीं बल्कि दूसरों के दर्द को समझने का नाम रोज़ा है हैः- फ़ुरकान मियां सज्जादा नशीन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खैराबाद सीतापुर रमज़ान उल मुबारक का महीना धीरे धीरे समापन की ओर है इसके आने की बेपनाह खुशी होती है लेकिन इसके जाने पर बहुत तकलीफ़ और अफ़सोस भी होता है लेकिन अल्लाह ताला के बनाए हुए नियमों के अनुसार ही संसार में सब कुछ होता है और जो भी वो करता है अच्छा ही करता है लेकिन मनुष्य को जिसमें फायदा दिखाई देता है उसे ही अच्छा समझता है लेकिन क़ुदरत की बात समझ नहीं पाता और उसका क्या मकसद है यह समझने की कोशिश भी नहीं करता है।

उक्त उदगार स्थानीय दरगाह हज़रत हाफ़िज़ असलम मियां साहब अलैहिररहमा के सज्जादा नशीन हाजी सैय्यद फ़ुरकान मियां हाशमी ने दरगाह में उपस्थित लोगों के सम्मुख व्यक्त करते हुए कहा कि रमज़ान शरीफ़ का बरकतों वाला महीना जैसे ही आता है घरों में खुशियां हो जाती हैं क्योंकि इस माह में इंसान को अपने बदलने का बेहतरीन मौक़ा मिलता है और रोज़ा रखने से उसको इसका एहसास भी होता है कि वो ग़रीब और परेशान लोग जो पैसा और रोज़गार न होने से भूखे रहते हैं तो इससे हमे उनकी भूख की तकलीफ़ का पता चल जाता है दूसरे इस महीने में एक नेक काम यानी पुण्य का काम करने से सत्तर नेकियों का लाभ अल्लाह ताला हमें देता है,इसी माह में क़ुरआन नाज़िल हुआ यानी रूए जमीन पर उतारा गया, इसी माह में अल्लाह ने तमाम खुशियों को हम सबके लिए भेजा जिनकी हमें ज़रूरत होती है। श्री हाशमी ने बताया कि इस महीने को तीन हिस्सों में बांट दिया गया है रहमत,बरकत और नजात यह आखिरी अशरा नजात का है

जहन्नुम यानी नरक से बचने का इस लिए खूब तौबा करके अच्छे काम करके अल्लाह से दुआ मांगें,अच्छे काम करने से गरीबों, अनाथों, असहायों के साथ मदद करने से उनके कारोबार व्यवसाय में बरकत होती है अल्लाह की मदद उनके साथ होती है।इन आख़िरी दस दिनों में लैलतुल क़दर यानी पांच रातें बताई गई हैं जिनमें रात भर जाग कर अल्लाह की इबादत करनी चाहिए अपने गुनाहों की तौबा भी करनी चाहिए और अल्लाह की मदद मांगनी चाहिए, रमज़ान का चांद निकलते ही अल्लाह ताला जहन्नुम के दरवाज़े बन्द कर देता है और जन्नत के दरवाज़े खोल देता है शैतान को क़ैद कर दिया जाता है लेकिन अफ़सोस कि आज हम सब दीन से इतना दूर होते जा रहे हैं कि इस मुबारक माह में भी न नमाज़ की पाबन्दी करते न रोज़ा रखते झूठ बोलना दूसरों की बुराई करना अपना फ़ैशन समझते हैं जो जकात अदा करने वाले हैं वो भी बड़ी तादाद में सही तरीक़े से अदा नहीं करते है यानी ज़क़ात का जो तरीक़ा है उसके अनुसार अदा नहीं करते, याद रखिए कि रोज़ा खाना पानी छोड़ने का नाम नहीं है यह आंख,कान, जुबान, हाथ, पैर सभी का होता है यानी आंख से ग़लत न देखें कान से न सुने जुबान से ग़लत न बोलें न गलत कहें हाथों से ग़लत काम न करें और पैरों से ग़लत जगह न जाएं

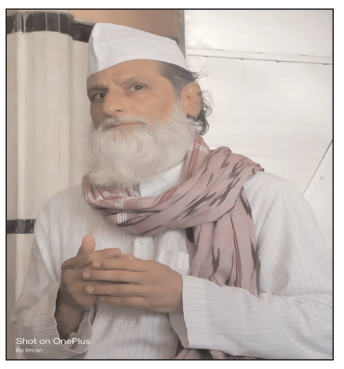

दूसरों यानी ग़रीब परेशान को पहले खिलाएं तब खुद खाएं इसका नाम रोज़ा है ग़लत तरीके से कमाई हुई धन दौलत से दूर रहें अपनी हलाल और मेहनत की कमाई हुई दौलत से खाएं इसका नाम रोज़ा है क़ुरआन की तिलावत, करें दुरूद शरीफ़ और तौबा खूब खूब पढ़ें अपने मां बाप का आदर सम्मान करें पड़ोसियों से प्यार मोहब्बत हमदर्दी करें अपने मुल्क के वफादार बन कर रहें मुल्क की सलामती और उसकी तरक़्क़ी के लिए दुआ करते रहें।

सदका ए फितर ईद की नमाज़ से पहले अदा कर दें सदका ए फितर घर के सभी लोगों की तरफ से देना अनिवार्य है भले ही ईद के दिन ही किसी बच्चे का जन्म हुआ हो उसका भी अदा किया जाएग। अन्त में मुल्क और मिल्लत के लिए दुआ भी की इस अवसर पर क़स्बे के काफ़ी लोग मौजूद थे मुख्य रूप से सैय्यद सलमी मियां नवेद असलम हाशमी, सैय्यद फरजान मियां हाशमी, सैय्यद फरहान मियां हाशमी, सैय्यद फरमान मियां हाशमी,कारी इस्लाम अहमद आरफी, इमरान सिद्दीकी, सलीम खान, अवसाफ अहमद,हाफ़िज़ आकिब, हाफ़िज़ आरिफ़ आदि।

नमाज का वक्त मुकर्रर गिराई मे 8.30 व फूलबाग मे सुबह 8.00 बजे होगी ईद की नमाज

गोपीगंज। ईद का पर्व मनाने की तैयारी पूरी कर ली गई है, नगर के गिराई व फूलबाग स्थित ईदगाह के साथ ग्रामीण क्षेत्र मे स्थित ईदगाह व मस्जिदो मे नमाज अदा की जाएगी। गिराई स्थित ईदगाह मे सुबह 8.30 तथा फूलबाग मे 8.00 बजे होगीद्य जामा मस्जिद गोपीगंज के पेश इमाम मौलाना अनिशुल कादरी ने यह जानकारी दी। बताया कि जामा मस्जिद गोपीगंज मे चुड़िहारी मोहाल और जामा मस्जिद के मानिंद लोगो की बैठक हुई, जिसमे यह तय किया गया,की गिराई जीटी रोड वाले ईदगाह में ईदुल फित्र की नमाज़ 8:30 बजे सुबह होगी,और पूरे गुलाब वाले ईदगाह में ईद की नमाज़ 8.00 बजे सुबह होगी। बैठक मे हाफिज अनीसुल क़ादरी, पेश इमाम जामा मस्ज़िद, हाफिज गुलाम मुर्तुजा इमाम मदीना मस्ज़िद,नई बस्ती,मौलाना मोहम्मद अवैस इमाम शाही मस्ज़िद मौलाना शुजाअत अली भगवतपुर, हाफिज मोहम्मद इरफ़ान आदि रहे। ग्रामीण क्षेत्र लालानगर, चकसहाब, गांधी स्थित ईदगाह के साथ बरजी, अमवा, गहरपुर, खानापुर मे अलग अलग समय पर नमाज पढ़ी जाएगी।

गैस किल्लत, कीमतों पर कांग्रेस का प्रदर्शन

● कलेक्ट्रेट पर सरकार विरोधी नारेबाजी, प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर- सोमवार को रसोई गैस की भारी किल्लत और आसमान छूती कीमतों के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर सरकार विरोधी नारेबाजी की और प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान कांग्रेस नेता राजेश तिवारी ने केंद्र सरकार की विदेश नीति और प्रधानमंत्री पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत पहले रूस और ईरान से सस्ते दामों पर और भारतीय मुद्रा (रुपये) में गैस खरीदता था, लेकिन मौजूदा सरकार ने इन देशों से संबंध खराब कर लिए हैं।

तिवारी ने कहा कि आज भारत अमेरिका से आठ गुना अधिक दाम पर गैस खरीद रहा है, जिसे भारत पहुंचने में 45 दिन लगते हैं। जबकि ईरान से गैस केवल सात दिन में आ जाती थी। राजेश तिवारी ने इसे प्रधानमंत्री की विदेश नीति की बड़ी विफलता बताया। उन्होंने राहुल गांधी के बयान 'नरेंद्र सरेंडर' का जिक्र करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने अमेरिकी दबाव में आकर अपने पुराने मित्र देशों का साथ छोड़ दिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री के पुराने बयानों का हवाला देते हुए उन पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया। तिवारी ने कहा, 'प्रधानमंत्री ने अपना नाम बचाने के लिए देश की ऊर्जा सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। आज गरीब के घर में चूल्हा नहीं जल रहा क्योंकि सिलेंडर गायब हैं और जो हैं वो इतने महंगे हैं कि आम आदमी की पहुंच से बाहर हैं।' इस प्रदर्शन में राहुल तिवारी, रंजीत सिंह सलूजा, सलाउद्दीन हाश्मी, शरद श्रीवास्तव सहित कई अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आजाद समाज पार्टी ने मनाया स्थापना दिवस और मान्यवर कांशीराम की जयंती

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जयसिंहनगर (शहडोल): जनपद पंचायत जयसिंहनगर के अंतर्गत ग्राम पंचायत कुबरा में रविवार को आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) का छठा स्थापना दिवस और बहुजन समाज के जननायक मान्यवर कांशीराम साहब की 92वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। यह कार्यक्रम जयसिंहनगर ब्लॉक के मौहारटोला स्थित 'डॉ. भीमराव अंबेडकर ऑनलाइन सीएससी सेंटर' में आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता आजाद समाज पार्टी के जिला अध्यक्ष कैलाश कुमार अहिरवार ने की।

महापुरुषों के विचारों पर चलने का संकल्प

कार्यक्रम के दौरान जिला अध्यक्ष कैलाश कुमार अहिरवार ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि मान्यवर कांशीराम साहब ने बहुजन समाज को सत्ता की दहलीज तक पहुँचाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। आज पार्टी के स्थापना दिवस पर हम सभी को उनके संघर्षों से प्रेरणा लेकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुँचाने का संकल्प लेना चाहिए।

कार्यकर्ता रहे उपस्थित

समारोह में भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी के पदाधिकारियों ने कांशीराम साहब के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया।

» इस अवसर पर मुख्य रूप से निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहेः

» गोलू बौद्ध (ब्लॉक संयोजक, जयसिंहनगर)

» बाबू भाई बौद्ध (ब्लॉक सचिव) पत्रकार दिनेश चौधरी

अन्य गणमान्यः पूरन अहिरवार, मिथलेश रैदास, रामटहल अहिरवार, रामसिया अहिरवार, रामसेवक रविदास, सुनील अहिरवार, मनोज अहिरवार, रविकांत अहिरवार, सपना रविदास एवं सागर रविदास। कार्यक्रम के अंत में सभी कार्यकर्ताओं ने पार्टी की मजबूती और सामाजिक परिवर्तन के लिए एकजुट होकर कार्य करने की शपथ ली।

रोजा रखना मजहबे इस्लाम का तीसरा फर्ज हैः-हाजी मौलाना नफीसुल हक मजाहिरी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

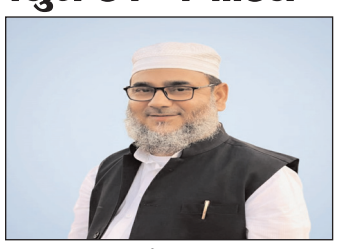

बिसवां (सीतापुर)। रमजानुल मुबारक का महीना अपनी खुसीसियात फजायल व बराकात की वजह से इम्तियाजी शान रखता है। जबकि रमजानुल मुबारक का महीना रूहानी तरक्की के लिए ऐसा है जैसा कि सावन का महीना हरियाली के वास्ते। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब रमजानुल मुबारक का महीना आता है तो जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और दोजख के दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं।शरकश शयातीन को कैद बंद में डाल दिया जाता है।इसी मुबारक महीने में कुरान पाक नाजिल किया गया जिसकी हिदायत के बदौलत इंसानी जिंदगी में ईमान और यकीन की रौशनी आई।यह बातें मदरसा इस्लामिया कन्जुल उलूम जहांगीराबाद के हेडमास्टर हाजी मौलाना नफीसुल हक मजाहिरी ने रमजान की फजीलत बयान करते हुए कहीं। उन्होंने कहा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ा की फजीलत व अहमियत बयान करते हुए इरशाद फरमाया कि आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब रोजा के नतीजा में सात सौ गुने तक बढ़ा दिया जाता है।रोजदार के लिए दो तरह की खुशियां हैं एक इफ्तार के वक्त की खुशी दूसरी जब वह अपने मालिक व मौला के हुजूर में बारयावी का सर्फ हासिल करेगा।

रोजगार के मुंह की बू अल्लाह त आला के नजदीक मुश्क की खुशबू से प्यारी और बेहतर है।रोजा दुनिया में नफस और शैतान के सख्त हमलों से बचाव के लिए और आखिरत में जहन्नम की हौलनाकियों से हिफाजत के लिए एक मजबूत ढाल है। रमजानुल मुबारक के रोज़े रखना मजहबे इस्लाम का तीसरा फर्ज है।जो शख्स इसके फर्ज होने का इंकार करे वह मुसलमान नहीं रहता और जो इस फर्ज को अदा न करे वह शख्स गुनहगार है।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में स्वच्छता को लेकर निकाली गयी जन जागरूकता रैली

लालगंज, प्रतापगढ़। अझारा स्थित भागवतदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर की दोनों इकाईयों द्वारा सामाजिक गतिविधियों को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। क्षेत्र के खजुरी एवं भेभौरा गांव में लगे शिविर में स्वयं सेवकों द्वारा साफ सफाई, जन जागरूकता रैली, डिजिटल साक्षरता अभियान, सड़क दुर्घटना से बचाव को लेकर जागरूकता जैसे कार्यक्रमों की ग्रामीणों में सराहना भी हुई देखी गयी। महाविद्यालय के संस्थापक रमेशचन्द्र मिश्र, गौरव मिश्र, रीमा मिश्रा व सीमा मिश्रा द्वारा छात्रों में सामाजिक चेतना व राष्ट्र सेवा की भावना को मजबूत बनाने के लिए शिविर के संचालन को उपयोगी करार दिया। प्राचार्य पूनम त्रिपाठी एवं जिला नोडल अधिकारी डा. फणीन्द्रनारायण मिश्र, प्रबन्धक सुनीता मिश्रा व संरक्षक प्रकाशचन्द्र मिश्र ने छात्र छात्राओं के द्वारा संचालित गतिविधियों को सामाजिक प्रेरणा करार दिया। इस मौके पर डा. अरविन्द शर्मा, रामकृष्ण शुक्ल, दयाशंकर मिश्र, तीर्थराज शुक्ल, शुभम् श्रीवास्तव, दीपक मिश्र, प्रदीप तिवारी आदि रहे।

हालियापुर टीम ने जीता राज्य स्तरीय वालीबाल प्रतियोगिता

● मिल्कीपुर के कुचेरा बाजार में आयोजित की गई थी डे नाइट पंडित हरनाथ तिवारी स्मारक वाली बाल प्रतियोगिता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मिल्कीपुर अयोध्या। मिल्कीपुर ब्लॉक क्षेत्र स्थित कुचेरा बाजार में पूर्व विधायक पंडित हरिनाथ तिवारी की स्मृति में राज्य स्तरीय डे-नाइट वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ अयोध्या महापौर महंत गिरीश त्रिपाठी ने किया। प्रतियोगिता में बाराबंकी, आजमगढ़, रायबरेली, अयोध्या, गोरखपुर और गणेश सिंह महाविद्यालय सहित कुल छह टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रममें मौजूद अयोध्या के महापौर महंत गिरीश पति त्रिपाठी ने पूर्व विधायक स्वर्गीय पंडित हरिनाथ तिवारी और डॉ. परमेश्वर नाथ तिवारी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। उन्होंने सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया। श्री त्रिपाठी ने कहा कि खेल युवाओं में अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास विकसित करते हैं, साथ ही प्रतिभाओं को मंच प्रदान कर सकारात्मक दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। प्रतियोगिता का उद्घाटन मुकाबला डोगरा रेजीमेंट और कुचेरा बाजार टीम के बीच खेला गया, जिसमें डोगरा रेजीमेंट ने कुचेरा बाजार को 21-15 से हराकर शानदार शुरुआत की। देर रात तक चले मुकाबलों में पहला सेमीफाइनल आजमगढ़ और बाराबंकी के बीच हुआ। तीन सेटों तक चले इस रोमांचक मैच में आजमगढ़ ने पहला सेट 32-30 से जीता, लेकिन टिकरा बाराबंकी ने पलटवार करते हुए दूसरा सेट जीतकर फाइनल में जगह बनाई।

दूसरा सेमीफाइनल मुकाबला एसएसबी हलियापुर और गणेश सिंह महाविद्यालय के बीच खेला गया। एसएसबी हलियापुर ने पहले सेट में गणेश सिंह महाविद्यालय को 25-17 से और दूसरे सेट में 25-15 से पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया। देर रात लगभग 1:30 बजे टिकरा बाराबंकी और एसएसबी हलियापुर के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया। फाइनल मुकाबले के पहले सेट में एसएसबी हलियापुर ने टिकरा बाराबंकी को 28-26 से हराया, जबकि दूसरे सेट में एसएसबी हलियापुर ने 25-18 से पराजित कर खिताब अपने नाम किया। विजेता और उपविजेता टीमों के कप्तानों को नकद पुरस्कार और ट्रॉफी प्रदान की गई। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में अंतर्राष्ट्रीय रेफरी उपेंद्र प्रताप सिंह, राष्ट्रीय रेफरी राम शिरोमणि सिंह, अंकित प्रताप सिंह, अनूप कुमार और पंकज द्विवेदी शामिल रहे।कॉमेंटेटर के रूप में मोहम्मद हुसैन, स्कोरर की भूमिका में अखंड, विवेक गुप्ता, लाइनमैन की भूमिका में सोनू, मंसाराम, सौरभ यादव, अनमोल यादव रहे। वॉलीबॉल टूर्नामेंट के आयोजक विनय कुमार तिवारी ने प्रतिभागी टीमों एवं मौजूद अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया और बताया कि यह टूर्नामेंट पिछले 45 सालों से अनवरत चल रहा है और आगे भी चलता रहेगा। इस अवसर पर मोहम्मद वसीम खान, अनिल दुबे, उदयराज यादव, शिवकुमार पांडे, डॉ विजय तिवारी सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।